अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

म्हारो लक्ष्य-राष्ट्र री प्रगति

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अप्रैल २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक ४ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

With Best Compliments From :

SARAD INDUSTRIAL PRODUCTS

4, Synagogue Street
Kolkata- 700001

Phone No. : 2242 2585, 2242 4654
Fax No. : 2242-2749
E Mail No. rohitashwaj@hot mail.com

Authorised Distributor

HUNSTMAN ADVANCE METERIALS INDIA PVT. LTD.

FOR

ARALDITE - ARASEAL & ARAVITE

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४-५
सम्पादकीय	६
अध्यक्ष की कलम से/ *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	७
समाज के बंधुओं से अपील/श्री भानीराम सुरेका	८
राजनीति और मारवाड़ी समाज/श्री गोकुलचंद शर्मा	९-१०
विघटन एक समस्या/श्री गोपाल चमड़िया	११
राजनीति से प्रभावित है समाज/श्री महेश सहरिया	१२
सुख और *समृद्धि की ओर/अर्लक*	१३
ना वो घर जंवाई कोनी हूयो/श्री गुलाबचंद कोटरिया	१४-१५
शिष्टाचार आखिर क्यों/श्रीमती सरोज लोधा	१६
बहुत घातक है दिखावे की प्रवृत्ति/श्री हरि प्रसाद अग्रवाल	१७
महात्वाकांक्षी मानव/डा. मंगला प्रसाद, जीवन की किताब/रंजू मोदी	१८
एक सौ पैंसठ वर्षीय ढूंढलोद की हवेली/डॉ. तारादत्त निर्विरोध	१९
जिसने कभी चखा नहीं दल बदल का लुत्फ/श्री रतन लाल जोशी	२०-२१

युग पथ चरण

★ तमिलनाडु में सम्मेलन की नई शाखा की पुर्नस्थापना सहित उत्कल महाराष्ट्र, बिहार आदि विभिन्न प्रांतीय रिपोर्टों का समावेश

★ अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच की महत्वपूर्ण रिपोर्टें।

२२-२६

समाज विकास

वर्ष ५४ ● अंक ४

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

ग्राहक बनिये / बनाइये
लिखिये / लिखाइये

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। - *सम्पादक*

आपके कुशल नेतृत्व में 'समाज विकास' मासिक पत्रिका बहुत ही सुन्दर एवं समाज को स्वस्थ व जागरूक बनाने हेतु प्रकाशन आपका एक महान प्रयास सफलता की सीढ़ी पर चढ़ रहा है।

- विजय कुमार बुधिया, अध्यक्ष बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति पटना

समाज विकास का फरवरी २००४ का अंक मिला। आरंभ से अंत तक पढ़ गया। प्रवासी मारवाड़ी भाइयों के परस्पर प्रेम, साझा गतिविधियों और राष्ट्रीय चिंतन के विचार देखकर प्रसन्नता हुई। आपने महाकवि कन्हैयालालजी सेठिया को 'पद्मश्री' सम्मान की खबर छापकर बड़ा पुनीत काम किया। यह हमारे १० करोड़ राजस्थानी भाईयों का सम्मान है। स्व. पद्मश्री सीताराम लालस और लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत के बाद श्री सेठिया यह सम्मान प्राप्त करने वाले तीसरे व्यक्ति हैं। प्रवासी भाइयों में प्रथम।

आपने १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन की सचित्र तस्वीर खींची जिनसे हम राजस्थानवासी आपकी गतिविधियां और उदात्त विचारों से अवगत हुए। आपने अपने अधिवेशन में राजस्थानी भाषा की मान्यता की बात रखकर बहुत अच्छा कार्य किया।

मेरा आपसे निवेदन है कि मारवाड़ी सम्मेलन अपने प्रत्येक सम्मेलन में राजस्थानी भाषा की मान्यता की बात रखकर अपनी बात नई दिल्ली तक पहुंचाने का कष्ट करें।

राजस्थानी की संवैधानिक मान्यता का सर्वसम्मति का प्रस्ताव भी समाज के अमेरिका के अधिवेशन के प्रस्ताव से अत्यधिक प्रभाव का कारण रहा है।

- पृथ्वीराज रतनू, उप सचिव राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

जैसा कि आपको मालूम है कि आगामी अप्रैल व मई में चौदहवीं लोकसभा का चुनाव होने जा रहा है। इस चुनाव में अपने समाज के कई सदस्यों को कांग्रेस, भाजपा, शिवसेना और भी कई पार्टियों द्वारा अपना उम्मीदवार घोषित किया गया है। कहीं-कहीं तो अपने समाज के सदस्य निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं।

इस विषय को ही आज इस पत्र के माध्यम से आप तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा हूं और अनुरोध कर रहा हूं कि आप इस विषय पर मनन करने की कृपा करें और चुनाव में उम्मीदवारों को विजयी बनाने के लिए अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यों की एक टीम बनाकर इनके लिए प्रचार कर इनको विजयी बनाने में मदद करें।

- प्रदीप मंत्री,
किशनगंज महेश्वरी सभा, किशनगंज

फरवरी अंक मिला, हार्दिक प्रसन्नता हुई। मुखपृष्ठ काफी आकर्षक एवं आनन्ददायक बन पड़ा है। सम्मेलन के नये पदाधिकारियों की जानकारी प्राप्त हुई। समस्त नये पदाधिकारियों का हार्दिक अभिनंदन। उनके कार्यकाल में सम्मेलन और अधिक जीवन्त होगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान की कलम से नि:सृत विचार बहुत ही सुन्दर एवं प्रेरक है। उनका यह कहना कि समाज के हित में त्याग और समर्पण की जरूरत है, शत-प्रतिशत सत्य है। कविवर कन्हैयालालजी सेठिया भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से विभूषित हुए ज्ञात करविशेष हर्ष एवं गौरव का बोध हुआ। १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव बहुत ही सामयिक एवं समाज को और अधिक ऊंचाई प्रदान करने वाले हैं।

- श्री युगलकिशोर चौधरी चनपटिया, बिहार

नव-निर्वाचित महामंत्री श्री भानीराम सुरेका को बधाई संदेश

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री निर्वाचित होने पर हम और हमारी बिहार की एकमात्र सबसे पुरानी संस्था बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना के सम्पूर्ण परिवार की तरफ से आपकी हार्दिक बधाई एवं कोटि-कोटि शुभकामनाएं एवं आपके दीर्घायु सफल जीवन की कामना सहित।

आपके नेतृत्व में सम्पूर्ण भारत के निवासियों को आपमें सम्पूर्ण आस्था है।

- प्रहलाद शर्मा, सचिव
बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना

प्रेरक विचारों से ओतप्रोत 'समाज विकास' का फरवरी २००४ का अंक प्राप्त हुआ। प्रकाशित सामग्री पठनीय, मननीय और प्रशंसनीय है। धन्यवाद। यह जानकारी अतीव प्रसन्नता हुई कि श्री भानीराम सुरेका अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री पद पर निर्वाचित हुए हैं, यह आपकी बहुआयामी प्रतिभा और समाज सेवा का सम्मान है जो आपको मिलना चाहिए था। लगभग १० करोड़ मारवाड़ी भारत के विभिन्न प्रदेशों व अंचलों में बसे हुए हैं। विदेशों में भी उनकी उपस्थिति कम नहीं है। मारवाड़ी समाज की पहचान, भाषा, संस्कृति, परम्परा और आदर्शों को सुरक्षित रखने तथा समाज के सुधार और विकास के लिए परिस्थितियों के अनुसार किये गये सम्मेलन के प्रयत्न और दिशा-निर्देशन सचमुच सराहनीय है।

- गोकुलचंद शर्मा, राजस्थान

यो संसारब णायो ईश्वर उणरी माया देखो
आदर रो आगार मिले गयो श्रवणकुमार सुरेको
मेरो शिष्य आज बण बैठ्यो, मोदी-ब्याह जंवाई
जिणनैं, अग्रज विश्वम्भरजी मोदी सुता विवाही
रूपिया दिया पांच सौ, कुर्सी छोड़, चरण सिर नायो
गुरु शिष्यां रो इसो धर्म, भारत में चिर थरपायो
कीर्तिवान पितु भानीराम सुरेका नैं सब जाणै
सामाजिक सेवा में, सब अखबार, नित्य छवि ताणै
आफिस में बड़ता ही नौकर, बढ़िया चाय पिलावै
अणजाण्ये आगन्तुक रै प्रति शिष्टाचार झिलावै
सूप-टमाटर री गर्मी स्यूं हिय अन्तर पिघळावै
वाह ! सुरेका श्रवण, रामजी तन्नै अमर बणावै
आज जियां ही सदा नैणसी पर उदारता ल्याये
होळी और दिवाळी पर चोखी स्हायता दिवाये
तूं म्हारो अग्रज जामाता, मोदी कुळ परणायो
बचपन में यो शिष्य हमारो, यूं संबंध सवायो
बेटा-पोता और पड़ौता तेरा खूब कुमावै
पड़दादा ये भानीराम सुरेकाजी सुख पावै

अम्बू शर्मा नैणसी

परिवर्तित इतिहास की एक झांकी और आज का समाज

✍ नन्दकिशोर जालान

मैं ने देवी कामख्या के मन्दिर की सीढ़ियों पर चढ़ना प्रारंभ ही किया था कि एक पण्डे ने मेरा परिचय चाहा। अरूचि दिखाने पर उसकी स्पष्टवादिता ने मुझे एक बार उसकी और घूमने पर विवश किया। वह कह रहा था, 'बाबूजी बाजार आपका व्यापार केन्द्र है, यह हमारी रोटी-उपार्जन का स्थल है।' मैंने वहां क्या किया प्रश्न यह नहीं है, बल्कि यह है कि वह व्यक्ति वास्तविकता को इन शब्दों में सामने क्योंकर रख सका?

वैसे तो विश्व में धर्म के आरंभ से वर्तमान तक देखें तो उसका विकास सहज समझ आता है। आदिम काल के मानव ने पग-पग पर मृत्यु से जूझते हुए भयवश ही धर्म को खड़ा किया। प्राकृतिक शक्तियों और भीषण जीव-जन्तुओं की पूजा आरंभ हुई। जब मनुष्य समूहों में रहने लगे तो अन्नदा रत्नगर्भा भू और जगत जनन् प्रक्रियाओं ने लिंग और योनि की पूजा-प्रथाओं का आविर्भाव किया। शक्तिशाली राज्यों की स्थापना ने व्यक्ति पूजा प्रचलित की और सबसे शक्तिशाली व्यक्तियों के प्रचण्ड रूप-भाव की अर्चना होने लगी। साहित्य और कला के विकास ने उस मानव मूर्ति के भयानक चेहरे की शान्त, सुस्मित, भयरहित और सर्वप्रिय मुद्रा में ला बदला।

इस क्रम में यूनान की तरह भारत में भी एक युग आया जब गांव-गांव, गली-गली, घर-घर, कमरे कमरे में अलग अलग देवताओं को स्थापित किया गया। अनासक्ति योग की तो बात ही क्या, सबे रंग-बिरंगे देवी देवताओं की शान्ति और पूजा भक्ति में ही अधिकांश समय का उपयोग किया जाने लगा। आचार-अनाचार कर्म-कुकर्म करनेवाले हर किसी के पास पण्डे पहुंचने लगे, उनके पापों को पुण्य में परिवर्तित करने की शक्ति बताकर उनकी धन-सामार्थ्य के अनुकूल फीस वसूल करके उनके तथा उनके पूर्वजों के लिए स्वर्ग में सीटे सुरक्षित करने लगे। जिसने जो टोना-टोटका बता दिया, वही उपचार और कष्ट निवारण का उपाय मान लिया गया। पीर की पूजा, डोम की अर्चना, वर्जित कार्यों पर बलि होने वालों की समाधियों की ओर लोग दौड़ पड़े। शिक्षा स्वास्थ्य व्यक्तित्व और ज्ञान-बुद्धि का ह्रास हुआ। अवनति की गति इतनी तीव्रता से बढ़ी कि अपढ़ तिलकधारी पण्डित, साधु वेष में ओछी से ओछी जमात के निकम्मे लोग, रसोईये, नौकर- चाकर, चूल्हा-चक्की या मेहंदी करने वाली नाउन या ब्राह्मणियों को बतात्या गोंपापंथी मार्ग धर्म के नाम से चल पड़ा। छोटे-छोटे फिरकों की अपनी अपनी लीलाएं सर्वगुण सम्पन्न मानी जाने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक इन सब ने देश को अधोगति के गहरे गर्त में ला पटका।

और तब एक हूक उठी उन व्यक्तियों में जो अंग्रेजी सता-सभ्यता, शिक्षा-दीक्षा, आचार-विचार के सम्पर्क में आये। यूनान में प्लेटो के समय के आसपास इस अधोगति के कारण दर्शनशास्त्र ने नई मान्यतायें दी और लाखों देवी-देवताओं को खत्म सा कर दिया गया। बच्चे-बच्चे के मुंह से नास्तिकता के शब्द आने लगे। प्रकृति को सर्वोच्च माना जाने लगा। प्लेटो के समय तक यूनान का सनातन धर्म दिवालिया हो गया और प्लेटो को अपने नये विधान में कहना पड़ा, 'जब अधिकांश लोग ईश्वर के अस्तित्व को मानते ही नहीं तो उसकी सौगन्ध लेने-देने की आवश्यकता क्या? अदालतों में अब केवल सच बोलने की हामी भर हो।' भारत जैसे बड़े देश में, जहां दस-बीस नहीं सहस्रों वर्गों की अपनी अपनी पोपलीलाओं ने समूचे लोक समाज को छोप रखा था, बुद्ध के समय बाद फिर ऐसी स्थिति आने में पिछले १०० वर्ष लग गये- उन्नीसवीं शती का उत्तरार्द्ध और बीसवीं शती का पूर्वार्ध- तो क्या आश्चर्य है।

इस पोंगापन्थी पर सबसे पहली चोट सन् १९२८ में ब्राह्म समाज की स्थापना और १९२९ में सती-प्रथा और बाल-

हत्या जैसी बर्बर प्रथाओं को गैर कानूनी करार करवा कर राजा राममोहन राय ने की। दूसरी चोट सम वाद का नारा उठाने वाले महाराष्ट्र के एक विचारक ने १८४० से १८५० के बीच लड़कियों और अस्पृश्यों के लिए शिक्षण-संस्थाएं खोलकर की। तीसरी और सबसे सबल, तर्कयुक्त और देशव्यापी चोट स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के प्रवर्तक द्वारा की।

जिन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा है वे भलीभांति जानते हैं कि धर्म के नाम पर जनता का शोषण यहां कैसी निर्दयता के साथ होता था। स्वामी दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने पाखण्ड और अज्ञान के विरुद्ध जेहाद बोला, वेद विहित ईश्वर और ज्ञान विकार के यथार्थ भाव का प्रतिपादन किया, संसार के सभी धर्मों की सभा में स्वामी विवेकानन्द का भाषण इतना मार्मिक व तथ्य भरा था कि आज भी उसके उद्धरण दिये जाते हैं। चातुर्वण को जन्म पर नहीं बल्कि कर्म पर आधारित बतलाया, समुद्र यात्रा, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह और खान-पान को वर्जित नहीं बल्कि शास्त्र-सम्मत और आवश्यक बताया, तथा अस्पृश्यता को घृणित और त्याज्य घोषित किया। स्त्री शिक्षा के व्यापक प्रचार, पर्दा, दहेज, उपर्युक्त मान्यताओं और अपने वेद विहित आर्य्य धर्म के प्रचार-स्थापन के लिए उन्होंने अथक और अडिग संघर्ष किया।

स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के कृतित्व ने भारत की राजनीति में क्रान्ति ला दी। देश में तभी से महापुरुषों की एक बाढ़ सी आयी। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, केशवचन्द्र सेन, तिलक, गोखले, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी श्रद्धानन्द और अन्त में महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश का कोना कोना जीवन और चेतना के एक-एक भाव में जागा और स्वाधीनता के संघर्ष के साथ-साथ पण्डा पुरोहितों की पोपलीलाओं और सामाजिक धर्म की पोपली दीवारों को आघात पर आघात दे चला। इस विशाल भूखण्ड का शायद ही कोई भाग और किसी भी भाग का कोई ही जन-मानव रहा होगा जिसकी बुद्धि और भावनाओं को इस नयी चेतना ने छुआ न हो।

यह सब इतना इतना हुआ तो अब देवी कामाख्या के उस पण्हे को भी वास्तविक का आश्रय लेना ही अधिक स्वाभाविक क्यों न लगता?

किन्तु....

मेरे लिए तो प्रश्न अब यह हो उठता है कि रूढ़ियों में सबसे अधिक डूबे मारवाड़ी समाज का भी सौ वर्ष पुरानी लीलाओं की ढहती दीवारों की इस पिछली शती में कोई निस्तार और विकास हुआ है या नहीं? और सत्य यह है कि इस नये युग के आरंभ से भले न हो, पर पिछले सत्तर वर्षों में यह समाज नयी चेतनाओं और सुधार भानाओं से केवल अछूता नहीं रहा, बल्कि कई ऐसी रूढ़ियों को भी तोड़चला है जो दूसरे समाजों में निरंतर बनी है और उन्हें खोखला किये जा रही है।

बीस से पैंतीस वर्ष की अवस्थावालों को देखना- समझना आवश्यक न लगे, पर उनसे पिछली पीढ़ी वालों की स्मृति में वे संघर्ष अभी बने होंगे जिन्होंने देश और समाज को पंगु बनाये रखने वाले अनेक अनेक अन्ध विश्वासों पर प्रहार के बाद प्रहार किये थे। बंग देश में आ बसे समाज के समझदार व्यक्तियों पर देश के चिन्तक मनीषियों की विचारधारा का प्रभाव पड़ा और समाज के तत्कालीन नेतृत्व ने समाज को सुधार-परिवर्तन की दिशा दी।

व्यक्ति विशेषों को हम न गिनें। लेकिन जीवन के हर स्तर और क्षेत्र में गत तीसरे से सातवें दशकों में इतने इतने आन्दोलन, संघर्ष और सत्याग्रह आदि किये गये हैं, और उनके द्वारा समाज की जड़ मान्यताओं, थोथी परम्पराओं और मूढ़ प्रथाओं को ऐसा आघात पहुंचाया गया है कि उस युग के मारवाड़ी समाज के बराबर में आज का मारवाड़ी समाज खड़ा किया जा सके तो एक दूसरे को अजायबघर जैसा लगेगा।

तो भी उन रूढ़ियों और चालों में बहते जाते आज भी हजारों लाखों घर है जहां अज्ञान और अशिक्षा के अन्धकार भरे वातावरण को सुधारने बदलने नहीं दिया जाता।

कंपकपी सी आती है उन आचार्यों, गुरुजनों और उनके सैकड़ों चेले-चेटियों को देख कर जो आधुनिक अणु युग की उच्च शिक्षा और बुद्धि के विकास के अभाव में देश और समाज की समस्याओं को सुलझाने में अंगुल भर सहयोग या मार्ग-प्रदर्शन नहीं कर सकते और पाखण्ड, आडम्बर, प्रवचना और पोंगापंथी मान्यताओं के धर्म का चोगा पहिने, रूढ़ियों और परम्पराओं के आश्रय पोषक बने, ज्ञान और बोध की सभी बातों को ताक पर रखे, रात दिन समाज को गुमराह करते रहते हैं। जिन प्रवचनों के इर्ग-गिर्द सच्चाई एक नहीं, जो कोटयाधीशों के बंगलों पर पनपते और शेष होते हैं, देखना यही है कि उनकी लीलाओं को ढह चलने में क्या और कितना समय और लगता है और देवी कामाख्या के पण्डे की तरह वास्तविकता को खुलकर सामने रखने की हिम्मत और हिकमत उनमें कब तक पनपती है।●

व्यवस्था में आमूल परिवर्तन जरूरी

✍ मोहन लाल तुलस्यान

राजनीति का उद्देश्य लोक कल्याण होता है। सदियों पहले महाराज भरत, जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा, ने लोकतंत्र की नींव रखते हुए कहा था कि पुत्र कल्याण या स्वकल्याण की भावना से राजनीति करना लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर करने जैसा है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था तो लागू है पर क्या राजनेता महाराज भरत के सिद्धांत का पालन कर रहे है? लोकतंत्र की आड़ में परिवार तंत्र को प्रतिष्ठित करने के लिए बेचैन हमारे नेताओं को क्या यह सुध है कि उनकी इस नीति से 'लोक' का क्या नुकसान हुआ है?

आजादी के जश्न पर 'दिनकरजी' ने कहा था- 'भारत धूलों से भरा आंसुओं से गीला
भारत अब भी व्याकुल विपत्ति के घेरे में
दिल्ली में तो है खूब ज्योति की चहल-पहल
पर भटक रहा है पूरा देश अंधेरे में।'

यह एक चेतावनी थी जिसके प्रति सतर्क होने की जरूरत थी। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे राजनेताओं ने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया। वे देश की चिन्ता से दूर अपना घर भरने में लगे रहे, अपने घर को चमकाने में लगे रहे।

राजनीति करने के लिए उन्होंने 'लोक' का नाम तो खूब लिया, उनके कल्याण की बातें भी खूब की पर हकीकत में लोक के प्रति उनकी भावना झूठे आश्वासनों और भड़कीले भाषणों तक सीमित रही।

वस्तुत: राजनीति से जब 'नीति' को अलग कर दिया जाता है तो उसमें विकार आ जाता है। ऐसे में राज को कायम रखने के लिए अराजकता की सृष्टि की जाती है एवं धनबल तथा बाहुबल से लोक को दबाया जाता है।

भारत में राजनीति अराजकता का पर्याय बन चुकी है। प्रमुख राष्ट्रीय दल हों या क्षेत्रीय किसी के पास देश और समाज को विकसित करने की न दृष्टि है, न योजना और न ही जज्बा। आदर्श और सिद्धांत को ताक पर रख दिया गया है। स्वार्थ केन्द्रित राजनीति में अपराधी तत्वों का प्रवेश एवं प्रतिष्ठा देश और समाज के समक्ष नई चुनौतियां पेश कर रहा है।

सत्ता तक पहुंचने के लिए संकीर्णता को सीढ़ी की तरह व्यवहार में लाया जा रहा है। जातीयता, साम्प्रदायिकता, धार्मिकता, प्रांतीयता प्रमुख चुनावी मुद्दे बन रहे हैं जबकि देश में व्याप्त भूखमरी, बेरोजगारी, हिंसा, लूट पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। भारतीयता की भावना को मजबूत करने के बजाय लोगों को बांटने का काम सुनियोजित तरीके से हो रहा है। इस देश में हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, सिख-बौद्ध-जैन-ईसाई ही नहीं ब्राह्मण, क्षत्रिय, यादव, डोम, चमार सब हैं पर भारतीय कोई नहीं है। भारतीय होने से पहले सब जाति और सम्प्रदाय के अंग है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में शायद ही कोई राजनेता ऐसा हुआ हो जिसने भारतीयता की भावना को मजबूत करने के लिए ठोस प्रयास किया हो। लोगों के समक्ष एक भी आदर्श नेता नहीं बचा है जिसका वे अनुसरण कर सकें। आदर्शों की दुहाई देनेवाले नेताओं के वास्तविक चरित्र को देख-सुनकर घृणाभाव उत्पन्न होता है।

कब कौन नेता किस दल का दामन थाम ले इसकी कोई गारंटी नहीं है। रातोंरात धुर दक्षिणपंथी वामपंथी और धुर वामपंथी दक्षिणपंथी बन जाने को स्वतंत्र है। कहीं कोई बंदिश नहीं, कहीं कोई प्रतिरोध नहीं। ऐसे में देश के भविष्य को लेकर चिन्ता स्वाभाविक है। अक्सर ये ख्याल आता है कि हम आगामी पीढ़ी के लिए क्या छोड़कर जायेंगे? राजनीति का यह प्रदूषण समाज और राष्ट्र की प्रगति को कब तक यूं ही बाधित किये रहेगा?

मेरी समझ से व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किये बिना देश का सर्वांगीण विकास और लोकतंत्र को मजबूत बनाना मुश्किल है। सिर्फ सत्ता परिवर्तन से व्यवस्था में परिवर्तन की आशा करना धोखे में रहना है।

भारत की जनता को अब यह तय करना होगा कि देश की योजनाओं में उसकी भूमिका क्या होगी एवं उन योजनाओं से उसे क्या लाभ मिलेगा। सब कुछ नेताओं के भरोसे छोड़ देने से काम नहीं चलने वाला।

व्यक्तिगत तौर पर किसी भी राजनीतिक दल या मतवाद की वकालत किये बिना मैं यह कहना चाहूंगा कि मारवाड़ी समाज के लोग जहां हैं, जिस परिस्थिति में हैं उसमें सुधार और विकास की पहल करनेवालों को ही अपना प्रतिनिधि बनायें। संकीर्णता के संदर्भ में ही नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक सरोकारों के सदर्भ में यह कहना चाहूंगा कि हमेशा इस बात का ख्याल रखें कि किसी भी तरह से मारवाड़ी समाज का जो अनिष्ट करता हो, समाज की जो उपेक्षा करता हो उसका प्रतिरोध करें।

चूंकि भारतीय राजनीति में 'संख्या' का महत्व बढ़ता जा रहा है एवं हम संख्या में इतने हैं कि किसी भी दल के चुनावी समीकरण को प्रभावित कर सकते हैं इसलिए समाज की भलाई के लिए संगठित होकर दबाव बनायें। आनेवाले दिनों में अपना राजनीतिक आधार तैयार करें ताकि संसद और विधायिकाओं में हमारी आवाज बुलंद हो सके।

समाज के बंधुओं से अपील

भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मुझे अभी हाल ही में मुंबई के एक विवाह में जाना पड़ा। बारात निकली, पंच सितारा एक होटल में स्वागत समारोह था। होटल में प्रवेश के पूर्व मुख्य सड़क पर बारातियों ने पूरा सार्वजनिक रास्ता नृत्य करके जाम कर दिया। गाड़ियों का आवागमन प्राय: बंध-हो गया, आतिशबाजियों, बंदूकों की फायरिंग की इतनी आवाज की आग निकल रही थी। मुझे लगा कहीं इस खुशी में दुर्घटना न हो जाये व लोगों की इस असुविधा के लिए मैं घबरा सा गया। पहले तो मैंने सबको होटल के अन्दर जाने की प्रार्थना की, किन्तु कौन मेरी सुने, मैंने लड़की व लड़कों को नाचने से रोका और कहा कि क्या आप पेशेवर हो गये हैं? क्या यही मारवाड़ी समाज की परम्परा है? घंटों तक नाचने वालों में कुछ लोग शराब भी पी रखी थी। बेचारे लड़की वाले भी परेशान थे और भी लोगों से अन्दर चलने का अनुरोध कर रहे थे, क्योंकि वक्त मुहूरत शास्त्रानुकूल बीत रहा था, स्वादिष्ट हाई टी बेस्वाद हो रही थी। रिसेप्शन के पास वाले एक कमरे में दुल्हन बारात की इंतजार में बारबार सज रही थी। खातिर करने आये मेहमान देर होने पर अपने-अपने घर लौट रहे थे। लड़की वाले सभी बेसहारा थे, हाथ जोड़कर उनके अभिभावकों से निवेदन के अलावा बेचारे क्या कर सकते है।

मैं वापस अपने घर आकर सोचता रहा कि क्या हमारे अभिभावक लोग इस सामाजिक बुराई को बढ़ावा देकर समाज पर कलंक नहीं लगा रहे हैं? नाच व ढोल की थिरक पर लक्ष्मी रूपी जो रुपयों का अपमान करके लुटाते जा रहे थे, जमीन पर गिर रहे थे, अगर इन्हीं रुपयों से गरीब, असहाय लोगों की सहायता करें, समाज के काम में लगावें ते इस धन का अधिक सदुपयोग होगा और नव दम्पत्ति को आशीर्वाद भी मिलेगा।

मेरी समझ में यह बैंड बाजों पर भोण्डा नाच, आतिशबाजी, धमा-चौकड़ी विवाह के शुभ मौके पर करना खतरे से खाली नहीं है, समाज के लिए यह ठीक नहीं है। मैं समाज के सभी वर्गों से निवेदन करता हूं विशेषकर नवयुवक वर्ग से कि वे अपने समाज की प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठा रखे व भलीभांति शुद्ध बनाने में सहयोग करें। पुरानी पीढ़ी में क्या यह सब होता था? अपनी संस्कृति व धर्म को न भूलें, इन कुरीतियों का डटकर विरोध करें। इस पर अपव्यय को रोककर समाज हित के रचनात्मक काम में लगावें, मद्यपान पर पाबंदी लगावें, विशेष कर सार्वजनिक जगहों पर महिलाओं व लड़कों के नृत्य को मना किया जाए।

मैं चाह रहा

- युगल किशोर चौधरी

मैं चाह रहा , बन नीलकंठ विष सारा भू का पी जाऊं।
दुनिया कम्पित भौतिकता से,
दानवता अट्टहास करती।
मानवता दृग में भर पानी,
विधवा सी बनी रूदन करती।
मैं चाह रहा, तम गहन मिटा, नूतन किरणों को छिटकाऊं
तप करूं भगीरथ-सा बनकर,
दूं समता की गंगा उतार।
जन-जन का शोषण जाल काट
कर दूं दलितों का नवोद्धार।
मैं चाह रहा, अभिशाप मिटा, खुशियों के गीत नये गाऊं।
मानव बनते जाते दानव
राजन करते बन नर पिशाच।
दानव दीवाली मना रहे,
हो रहे पराजित देव आज।
मैं चाह रहा, दुष्कर्म मिटा, बंधुत्व भावना फैलाऊं।
रचना कर दूं ऐसे जग की
हो जहां न शोषण उत्पीड़न।
सभ्यता-शांति की वीणा बजे,
हो नहीं कातरों का क्रन्दन।
मैं चाह रहा, हर त्रिविध ताप, सुषमा कण-कण में बिखराऊं।
मैं चाह रहा, बन नीलकंठ, विष सारा भू का पी जाऊं।

एक सफेद जंगली फूल

- शशिकांत गोस्वामी

वह तो एक छोटा-सा
क्षण भर था
जिसमें मेरे भीतर उगा था
भीनी महक वाला
एक सफेद जंगली फूल
बांध गया था जो
मेरे समूचे होने को
अपनी नर्म और नन्हीं बाहों में
पलक की झपकी
जितनी देर भी भर में
अनायास
अनजाने
खुद व खुद
उसके बाद से तो मैं
निरंतर
सिर्फ दोहराता रहा हूं
उस अद्भुत क्षण को ठिठकी हुई
स्मृति में
सफेद जंगली फूल की देह गंध को
दोहराता भर हूं।

राजनीति और मारवाड़ी समाज

✍ श्री गोकुलचंद शर्मा, राजगढ़ (राजस्थान)

मारवाड़ी समाज शास्त्रानुसार धर्म और अर्थ का सम्पादन करता रहा है। अर्थ से काम (परिवार पोषण व सम्वर्द्धन) और धर्म से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग स्वीकार करता है। उसने अपने आर्दश, संस्कृति की रचना और और जीविका संसाधनों को धर्म के अनुकूल बनाये रखने में सतत् प्रयास किये हैं। धर्म उसके चेतन और अचेतन मन में समाहित है। वक्त का मिजाज समझकर अपने व्यवहार और स्वभाव में भी उसने आवश्यक परिवर्तन किये हैं। वह रूढ़िवादी नहीं है वह मध्यम मार्गी है। नूतन और पुरातन में समन्वय बनाये रखता है। सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री राज.के. पुरोहित ने ठीक ही कहा है- 'मारवाड़ी समाज का सबसे बड़ा योगदान उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में है जो किसी भी देश का महत्वपूर्ण अंग है।' मारवाड़ी का अर्थ मात्र पैसा नहीं है, उसने विकास के सभी क्षेत्रों में अपनी सेवाएं अर्पित की है।'

इतिहास साक्षी है कि वह किसी भी युग में निष्क्रिय नहीं रहा, सार्वजनिक जीवन में उसकी अहम् भूमिका रही है। वक्त की राजनैतिक धारा से कभी अलग-थलग नहीं रहा। वर्तमान में भी उसके पास सक्रिय, सम्पन्न, समर्पित और शक्तिशाली राजनेता है। फिर भी सम्मेलन को राजनैतिक और सार्वजनिक जीवन में भाग लेने से संबंधित प्रस्ताव पारित करने की आवश्यकता महसूस हुई- प्रस्ताव में कहा गया है- 'आज के लोकतांत्रिक युग में देश के राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की उत्सुकता समाज के युवक-युवतियों में जितनी पैदा हुई है उसमें और स्फूरण की आवश्यकता है। देश सेवा की भावना को मूर्त्तरूप देने और देश की समस्याओं के समाधान हेतु सक्रिय भाग लेने के लिए यह सम्मेलन भावना को मूर्त्तरूप देने और देश की समस्याओं के समाधान हेतु सक्रिय भाग लेने के लिए यह सम्मेलन इसे आवश्यक समझता है कि समाज की प्रतिभा राजनीतिक और सार्वजनिक सेवा के कार्यक्रमों में बड़ी से बड़ी संख्या में भाग ले जिससे देश की प्रगति की मुख्य धारा में यह समाज भी समुचित योगदान दे सके....'।

आज भारत का होनहार व्यक्ति सरकारी सेवा (सार्वज़निक सेवा) में जाने के लिए ही ऊँची-ऊँची डिग्रियां प्राप्त कर रहा है, प्रशासनिक सेवा के लिए कम्पीटिशन करता है राज्य और भारत सरकार के उच्च पदाधिकारी बनने के सपने संजोता है। जिलाधीश, न्यायाधीश, राजस्व, पुलिस, लेखा, चिकित्सा, अभियांत्रिक, संचार यातायात आदि अनेक सेवाएं हैं जिनमें मारवाड़ियों का प्रतिशत बहुत कम है ये प्रतिभा के पद हैं, अखिल भारतीय सेवा आयोग, राज्यों के सेवा आयोग समस्त पदों का चयन करते हैं। सम्मेलन का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह इन पदों पर मारवाड़ियों को पहुंचाने में सक्रिय योगदान करें, प्रोत्साहन के लिए कोचिंग सेंटर चलाये। भारत की नौकरशाही की सेवा ही सार्वजनिक सेवा है जिसमें ऊपर की कमाई एक बड़ा आकर्षण है, भारत की नौकर शाही (सिविल सर्विस) विश्व में सर्वाधिक भ्रष्ट तंत्र है, उस पर राजनेताओं का नियंत्रण नाममात्र का है। राष्ट्र की जनता का ७५ प्रतिशत बजट नौकरशाही हजम कर जाती है। मीडिया पर भी इसका पूरा नियंत्रण है, भारत का मीडिया नौकरशाही का पूरा दास है। राजनैतिक दल और उनकी सरकारें इसका विरोध करके प्रशासन नहीं चला सकती है, वस्तुतः मंत्रियों के कार्यालयों की नीति का निर्धारण सचिवालय के अधिकारी करते हैं। प्रतिभा नौकरशाही से धन, प्रभाव और सुरक्षा प्राप्ति के लिए आकर्षित है। नौकरशाही के बढ़ते दबदबे से ही हमारा विकास और राष्ट्रीय आय में वृद्धि नाम मात्र की हो रही है।

इस प्रस्ताव में राजनीति में सक्रिय भाग लेने का आह्वान किया गया है जो कुछ अस्पष्ट और अटपटा सा है। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया की सोच कुछ उपयोगी लगती है- 'राजनीति में आने के लिए ग्रास रूट से संघर्ष करने पड़ते हैं और उस समय समाज की जरूरत पड़ती है, पर वह जरूरत पूरी नहीं होती, नहीं तो हर घर से एक सदस्य को राजनेता बनने से कोई रोक नहीं सकता, नजरिया बदलना होगा। सभी चाहते हैं कि समाज में कोई नेता सुभाष पैदा हो परंतु साथ ही साथ यह भी चाहते हैं कि सुभाष पड़ोस में पैदा हो अपने घर में तो बिड़ला ही पैदा हो।'

बिड़ला पैदा होने की सोच कोई उपहास नहीं है यह हकीकत है और देश और समाज के लिए बहुत योगी है, वस्तुतः श्री घनश्यामदासजी बिड़ला जैसे तेजस्वी उद्योगपति की भूमिका हर विकास के हर क्षेत्र में सराहनीय है। उन्होंने राजनीति, धर्म, व्यवसाय, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा और धर्म के क्षेत्र में अद्भुत कार्य किए हैं। वे राजनीति से प्रभावित नहीं हुए बल्कि राजनीति ही उनसे प्रभावित हुई। महात्मा गांधी, पं. नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण, अब्दुल कलाम आजाद, श्री बी.आर. अम्बेडकर, लोकमान्य जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया एवं विनोवा भावे जैसे भारत के महान पुरुष श्री बिड़ला के सहयोग की आकांक्षा रखते थे। देश और विदेश के बुद्धिजीवियों के

दिल और दिमाग पर उनके व्यक्तित्व का जितना प्रभाव पड़ा है उतना प्रभाव आज का सक्रिय राजनेता कई जन्म लेकर भी नहीं डाल सकता। भारत की अर्थनीति के वे सही मायने में निर्माता थे।

आज की राजनीति तो धन की दासी बन गई है। जन प्रतिनिधि, जज, मंत्री और मीडिया सब धन के प्रभाव से ही प्रेरित है। धन एक महान शक्ति है जिसका कोई विकल्प नहीं, सात पीढ़ियों का धन जोड़ने के लिए ही तथाकथित प्रतिभा राजनीति में या सार्वजनिक सेवा में खींची चली आती है।

वस्तुत: राजनीति समाज सेवा के लिए नहीं है व्यक्तिगत पेशा बन गई है जिसका देश की उत्पादकता से नाम मात्र का सम्बन्ध है। राजनेता पैदा कुछ नहीं करते, जनता से अर्जित धन को निर्माण कार्यों में लगाने के नाम पर अपना घर बना लेते हैं, इसमें बड़ी सच्चाई है। केन्द्रीय राजमंत्री दिलीप गांधी की सोच सरासर बेबुनियाद है साथ में सरल स्वभाव की जनता को गुमराह करने वाली है। वे कहते हैं- 'हमारी राजनीतिक सोच यह हो कि हम कौन सी पार्टी के मार्फत आगे बढ़ कर समाज हित का कार्य कर सकें।' माननीय मंत्री महोदय स्वयं जानते हैं कि कोई राजनीतिक दल समाज हित के लिए काम नहीं करता, वह तो अपने दल के हित में ही काम करता है। राजनैतिक दलों को घोषणा पत्र और कार्य योजनाओं में राष्ट्रहित नहीं, चोट की राजनीति से सत्ता प्राप्त करने की कूटनीति अधिक निहित है इसके लिए वे जनता के पैसे से अपनी उपलब्धियों का भारी भरकम प्रचार करते हैं। दल-बदल को बढ़ावा देते है, सिद्धांतहीन गठबंधन करते हैं। समाजहित सत्य और न्याय पर आधारित वह प्रक्रिया है जिसमें सिद्धांत के आधार पर देश की नीति निर्धारण होता है।

आज देश के सामने सबसे बड़ी समस्या राजनीति में सक्रिय भाग लेने की नहीं है बल्कि प्रत्येक वर्ग, संगठन समाज में राजनीतिक चेतना की आवश्यकता है। प्रजातंत्र में सरकार के भ्रष्ट होने का खतरा सदैव बना रहता है। सरकार की अदूरदर्शी नीति, गुप्त एजेंडों से सभी की सुरक्षा और प्रगति खतरे में पड़ सकती है। प्रजातंत्र और उसके निर्माण के आधार क्षतिग्रस्त हो सकते हैं, नागरिक की बहुमूल्य आजादी खतरे में पड़ सकती है। ऐसी सरकार पर अंकुश रखने और उसे राष्ट्र के हित में काम करने को विवश करने की भावना का नाम राजनैतिक चेतना है। सजग राजनैतिक चेतना से सम्पन्न लोग ही देश की स्वतंत्रता की रक्षा और अनुशासन की प्रणाली की स्थापना कर सकते हैं।

आज कुकुरमुत्ते की भांति अनेक सिद्धांतहीन प्रांतीय दल बन रहे हैं। मुद्दों पर आधारित संकीर्ण सोच के कारण व राष्ट्रहित को क्षति पहुंचा रहे है। यह प्रवृत्ति देश की एकता, अखण्डता और विकास के लिए घातक है। ऐसे दलों ने हमारी राजनीतिक चेतना को पीछे धकेला है, भाषा, प्रदेश, भूमिपुत्र, धर्मसम्प्रदाय, जातिवाद के नाम पर ये दल मारवाड़ी समाज की सुरक्षा के लिए चुनौती है क्योंकि मारवाड़ी समाज हर राज्य, प्रदेशों में अल्प संख्यक रूप में आबाद है, स्वार्थपूर्ण ओछी राजनीति करने वाले दल उनको इन प्रदेशों से खदेड़ने के लिए बहाना ढूंढ़ते रहते हैं। असम, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, दक्षिण के कतिपय राज्यों मे यह भावना किसी न किसी रूप में जीवित है। इसके लिए केन्द्र में मजबूत बनाने वाली सिद्धांतवादी सही अर्थ में एक सम्पूर्ण भारतीय सरकार स्थापित होनी आवश्यक है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है तो उसे प्रत्येक राज्य की विधानसभा में संसद में मारवाड़ियों की हितैषी, लॉबी, प्रेशरग्रुप, दबाव समूह की स्थापना करनी चाहिए।

सन् १९३५ के इंडियन एक्ट में ब्रिटेन द्वारा एक सम्प्रदाय को अलग मताधिकार दिया गया जिसका प्रमाण सभी जानते हैं। नई लोकसभा के चुनाव से सम्बन्धित हो रहे प्रचार को देख सुन कर ऐसा लगता है कि मात्र कुर्सी प्राप्ति के लिए जातीगत 'रीजर्वेशन' और सम्प्रदायवाद को फिर हवा दी जा रही है। प्रत्येक भारतीय के लिए विचारणीय है कि लम्बे अंतराल में इसके क्या परिणाम उभर कर आयेंगे।

जैन समुदाय अल्पसंख्यक समाज की ओर

यह सूचना प्राप्त हुई कि पश्चिम बंगाल सरकार हिन्दुओं के अविभाजित अंक को इस प्रदेश में 'अल्पसंख्यक समुदाय' घोषित करने जा रही है। प्राय: प्राय: यह निर्णय ले लिया गया है और कलकत्ता के हाईकोर्ट को इस व्यवस्था की स्वीकृति के लिए प्रस्ताव पेश कर चुकी है। जैन समुदाय के कुछ बंधुओं से बात हुई तो अधिकतर व्यक्ति का दृष्टिकोण इसके विपरीत था जबकि कुछ लोगों ने इसके पक्ष में भी राय जाहिर की। लेकिन वे यह खुलासा नहीं कर सके तो पश्चिम बंगाल में बसे जैन समुदाय और अन्य ऐसे जो भिन्न-भिन्न समुदाय हैं, उन्हें इससे राजनैतिक व औद्योगिक क्षेत्र में क्या लाभ उपलब्ध होंगे।

इस समय देश में नई सांसद का चुनाव हो रहा है, उसमें कई जगह छोटे-छोटे समुदाय, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान हो या क्रिश्चियन हों, अपने को अल्प समुदाय घोषित करवाने की जोरदार मांग कर रहे हैं। देश की प्रगति में ऐसा कौन-सा स्थान है जहां इस प्रकार के वातावरण के हिमायतियों को विशेष लाभ पहुंचा है।

यह पूरा का पूरा वाकया विचारणीय है जिससे समय के अन्तराल में देश की एकता का प्रश्न पुन: खतरे की गहराई की ओर बढ़ने न लगे।

- सम्पादकीय

विघटन- एक समस्या !

✍ श्री गोपाल चमड़िया, बेगूसराय

आज परिवार की परिभाषा बदलकर इतनी सिमट गयी और सीमित हो गई कि बस पत्नी-पति अपने बच्चे। बहुत हुआ तो ससुराल पक्ष। आज की नई पीढ़ी इसमें मां बाप एवं अन्य को सीमित करना अपनी शान के विरुद्ध समझते हैं। पहले हम बारात लेकर लड़की लाने जाते थे अब लड़की वाले आते है लड़के वाले के यहां लड़का ले जाने के लिए। अत: मेरी विचार धारा के अनुसार जो पहले मान्यता थी 'लड़की पराया धन होती है' वह बदलकर लड़का पराया धन हो गया है समाज बदला, मान्यताएं बदली।

आज सभी स्वतंत्र एवं स्वतंत्र जीवन बीताना चाहते हैं उन्हें बड़ों का हस्तक्षेप चाहें वह उनके हित में ही यों न हो, एकदम स्वीकार नहीं है। उनका आदर सत्कार भी अब ऊपरी मन से ही किया जाता है। सेवा एवं आदर की तो बात छोड़ दीजिए विचार संकुचित हो गये है इसके दुष्परिणाम भी भोग रहे हैं, पर फिर भी वह बड़ों के बंधन में उनके आदर्शों को मानने। जीवन में उतारने तैयार नहीं है उसे क्षणिक सुख की अभिलाषा होती है चाहे वह दुर्गामी दु:ख का कारण ही क्यों न हो। आज की युवा पीढ़ी के सोच का अस्तर, खान पान एवं टी.वी. के सीरियल को देख-देख कर इतना बिगड़ गया है कि अब इन्हें बड़ों से पूछकर कुछ करने में उनके पैर छू कर आशीर्वाद लेने में हीनता लगती है जबकि यही एक मात्र साधन उनके प्रगति करने फूलने का है। पहले परिवार में सभी लोग एक साथ एक टेबुल पर जुट होकर खाते थे विचारों का आदान प्रदान करते थे जिससे सभी में प्रेम एवं सौहार्द्र बना रहता था पर अब तो सभी अपने अपने कमरों में सीमित हो गये हैं घर का काम करने में संबंधियों से रिश्ता रखने में बहुत ही उदासीनता रहते हैं। बहुत से परिवारों के पतन का कारण भी ये ही विचार धाराएं बन गयी है। आज की युवा पीढ़ी मेहनत एवं ईमानदारी एवं जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए अर्जन नही करना चाहती हैं उसे सरल, बिना अधिक ऊर्जा लगाये भरपूर आय चाहिए क्योंकि उनकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए यथा साधना अर्जन नहीं कर पाते है तो निराशा पनपती है और गैर जिम्मेदाराना हरकतें करते हैं आज का युवा वर्ग भ्रमित हो गया है। भटक गया है अत: वह कभी-कभी अनैतिक, असामाजिक यहां तक कि गैर कानूनी हरकतें भी कर बैठते हैं। जिसका फल समाज, परिवार सभी को भुगतना पड़ता है।

अत: ऐसी परिस्थितियों में समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों का कर्त्तव्य होता है कि इन दिशाओं में बराबर ज्ञान शिविर लगाये शिक्षा का माध्यम इन विन्दुओं से होकर गुजरे जिससे देश, परिवार समजा का कल्याण हो, भटकी हुई युवा पीढ़ी को एक मार्गदर्शन मिलें। यों तो पहले कि अपेक्षा भगवान में आस्था बढ़ी है पर परिवार के प्रति जिम्मेदारियों की अनदेखी भी बढ़ी है।

बच्चों को बड़े-बड़े होस्टलों में दाखिला करा दिया जाता है, घर परिवार से अलग रहते हैं वे संस्कार जो पड़ने चाहिए वो नहीं पड़ पाते हैं जिससे समस्यायें और भी जटिल होती जा रही है।

उन्हें समझना होगा कि सफलता का मार्ग बड़ों का आशीर्वाद एवं भाग्य एवं पुरुषार्थ करना ही है। उन्हें पूरी ईमानदारी लगन एवं दृढ़ निश्चय से अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर होना होगा। और अपने दायित्वों को समझ कर सजग होकर निभाना पड़ेगा। बड़ों का सम्मान करना उन्हें अपना आदर्श मानना सीखना होगा। तभी आज के परिवार की विघटन की जो समस्या दिन व दिन बढ़ती रही है इस पर रोक लग सकता है जिसका लाभ देश, समाज, परिवार एवं प्रत्येक व्यक्ति को होगा।●

दहेज एक सबक

- कु. स्वीटी अग्रवाल, बानबिरा गुदेरपाली (उड़ीसा)

बाबुल के घर पराया धन है तू
ससुराल में बनी पराई बेटी ।।
अपना-पन तुझे कहीं न मिला
हाय नारी की किस्मत है कितनी खोटी।
लड़की देखने गये एक सज्जन ने
अपने बेटे की तारीफ करते हुए कहा-
मेरा बेटा कमाता है ढेर सारा नोट
उसमें नहीं है कोई खोट
वैसे आपसी बेटी भी हमें
लगी बड़ी अच्छी
और आचार व्यवहार से भी
लगती है सच्ची ।।
दोनों की बहुत ही अच्छी रहेगी जोड़ी।
पर पहले आपसे मैं बात चाहूंगा थोड़ी।
वैसे तो आप जो भी देंगे
हम सिर्फ वहीं लेंगे।
और फिर बदले में अपना
बेटा भी तो देंगे।
हमें दहेज में चाहिए सिर्फ मोटर
साथ में स्कूटर, टी.वी. एवं फर्नीचर।
कुलर, पंखे और मिक्सी
और खाने की मेज ।।
तभी आपकी बेटी के नसीब में
होगी सुहाग की सेज ।।
बाते सुनकर लड़की के पिता के
खड़े हो गये कान ।।
अभी तक उसे उस सज्जन के
लोभी होने का नहीं था भान ।।
साथ में हम आपको देंगे अपनी डांटर।
उसके हाथ में सदा रहेगा एक हंटर।
उससे वह दूर करेगी आप सभी की खाज
मुझसे दहेज मांगते
क्या तुमको आती नहीं है लाज
वक्त रहते ही आ जाओ आदत से बाज।
दहेज के नाम से भीख मांगना
चलन बन गया है आज।
चले जाओ फिर न करना इधर का रुख।
क्योंकि मैं नहीं देखना चाहता
आप जैसों का मुख।

राजनीति से प्रभावित है समाज का परिदृश्य

✍ श्री महेश सहारिया, कलकत्ता

पर्यावरण प्रेमी, समाज के सुपरिचित श्री महेश कुमार सहारिया के अनुसार वक्त के साथ-साथ दुनिया की हर चीज बदलती रहती है, इसलिए परिवर्तन के मौजूदा दौर में अच्छे-बुरे की पहचान करना बहुत मुश्किल है। जो हो रहा है वह अच्छा है और जो आगे होगा वह भी अच्छा ही रहेगा।

सामाजिक परिदृश्य में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है और परिवर्तन का यह सिलसिला बेरोकटोक जारी है। सिर्फ भारत का ही सामाजिक ढांचा नहीं बदला बल्कि समूची दुनिया बदलकर नये रूप में आज हमारे सामने है। यह सब स्वाभाविक भी है। हमें परिवर्तन से होने वाले प्रभावों को आश्चर्य से नहीं देखना चाहिए। इसमें निगेटिव और पाजिटिव का विश्लेषण करना भी काफी मुश्किल है। यह सब तो होना ही है और होता रहेगा। समाज को देखने का सबका नजरिया अलग-अलग है। कोई अगर इसे पश्चात संस्कृति की देन मानता है तो कुछ ऐसे भी लोग है जो मौजूदा सामाजिक परिवेश के समय के साथ होने वाले परिवर्तनों से जोड़कर देखते हैं। समय के साथ-साथ अपनत्व की भावना में कमी आयी है। लोग अपने परिवार और अपने बच्चें तक ही सीमित हो गये हैं। सामूहिक रूप से सबके हित के लिए काम करने की इच्छा और समाज कल्याण के लिए सक्रिय होकर योगदान करने की भावना में कमी आयी है लेकिन इसे यह निगेटिव नहीं है। क्योंकि जिस तरह से बदलाव की आंधी ने हमारे सामाजिक ढांचे को झकझोरा है परम्पराओं, प्रथाओं पर असर डाला है उसको देखते हुए यह आश्चर्य नहीं है। पहले के लोगों में परिवार के हित में, समाज के हित में देश के हित में त्याग व बलिदान की भावना रहती थीं। आज के लोग स्वकेन्द्रित हो गये हैं। संयुक्त परिवारों की परम्परा धीरे-धीरे खत्म होने की कगार पर पहुंच गयी है। अगर हम इस समूचे परिदृश्य का बारीकी से विश्लेषण करें तो पता चलता है कि राजनीति दूषित होने और इसका रूप बेहद खराब हो जाने की वजह से ही सामाजिक परिवेश में तरह-तरह की गंदगी पैदा हो गयी है। क्योंकि मेरा मानना है कि शासक वर्ग की जिस तरह की नीति होगी समाज भी उसी तरह से ही चलेगा। इतिहास उठाकर देखिए तो पता चलता है कि राजा-महराजाओं का जिस तरह का चरित्र, व्यवहार, नजरिया और शासन रहता था उसी तरह की प्रजा भी होती थी।

समाज में तलाक के मामले बढ़ने के पीछे एक ओर जहां समझौता कर चलने की भावना और सहनशक्ति का अभाव है वहीं दूसरी और आर्थिक और वैचारिक स्वतंत्रता भी एक प्रमुख कारण है। तलाक आदि के मामले बढ़ने के लिए पश्चिमी संस्कृति को दोषी ठहराना उचित नहीं होगा, क्योंकि कोई भी संस्कृति आकार किसी भी दूसरी संस्कृति पर अपना आप असर नहीं डालती। हर संस्कृतिकी अपनी कुछ विशेषता होती है। हमारे सामने विकल्प हैं। हम किसी भी संस्कृति की अच्छाइयों को ग्रहण कर बुराइयों से दूर रह सकते हैं। एक तरफ हम पश्चिमी संस्कृति को अपनातेजाए और दूसरी तरफ उसको दोषी भी ठहरायें यह किसी भी तरह से उचित नहीं है। दरअसल सोसायटी और कल्चर को अलग-अलग दृष्टि से नहीं देखना चाहिए यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। सोसायटी जब चेंज होती है तो कल्चर अपने आप चेंज हो ही जाता है। मेरा मानना है कि परिवर्तन के जो कुछ भी कथित प्रभाव समाज में देखने को मिल रहे हैं यह तो एक शुरूआत है, यह अंत नहीं है। अभी और भी बहुत कुछ होना बाकी है। पश्चिम बंगाल के उद्योग-व्यापार में आई गिरावट के पीछे कई कारण हैं इसमें से कई कारण यह भी है कि यहां के राजनीति नेतृत्व ने पहले भूमि सुधार, कृषि क्षेत्र और ग्रामीण सुधार पर ध्यान दिया, औद्योगिक क्षेत्र को नजरअंदाज किया। हालांकि पश्चिम बंगाल सरकार को कृषि क्षेत्र और भूमि सुधार क्षेत्र में सफलता हासिल हुई है लेकिन उद्योग के क्षेत्र में यह राज्य पिछड़ गया है। मौजूदा श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व वाली सरकार की सोच में व्यापक परिवर्तन आया है खासकर बुद्धदेव भट्टाचार्य उद्योग और व्यापार की तरक्की के लिए पुरजोर कोशिश कर रहे हैं लेकिन जो माहौल बन गया है उसको बदलने में समय लगेगा।

एक एक चिनगारी में ही
कितने काल अशेष भरे हैं
कितनों के अरमान अधूरे
यहां राख का वेश धरे हैं
नित प्रति नई नई आहुतियां
धधक रही मरघट की ज्वाला।

- डा. शिव मंगल सिंह सुमन
'जीवन के गान' से

तुम पी रहे हो गरल
कि देख नीलकंठ मुग्ध है
सुधा लजा गई
अमर पतित, असुर विक्षुब्ध हैं
मगर अभी तो पग प्रथम
कहां समाप्त साधना ?

- डा. शिव मंगल सिंह सुमन
'विश्वास बढ़ता ही गया' से

सुख और समृद्धि की ओर

मैं एक मनोवैज्ञानिक हूं। इस नाते छोटे-बड़े और सरल-जटिल सभी प्रकार के लोगों के सम्पर्क में आया हूं। मैंने हरेक के जीवन के उन आन्तरिक तत्वों को खोज लेना चाहा है जिन से जीवन में उसे सफलता मिली। और सदा ही दो तत्त्व मुझे महत्व के लगे। एक : शान्त मन से और स्थिर बुद्धि द्वारा विचार विवेचन करके जो उचित लगे उसे अपना कर्त्तव्य समझना और फिर अपना श्रम और अपनी शक्ति उधर ही लगा देना। दो : प्रथम आवेग में ही जो सहज प्रेरणा हो उसे ही निर्दिष्ट मान चल पड़ना।

यह तो मैं स्वीकार करूंगा कि अपने वश का सारा इतिहास मंझार कर भी मैं ऐसे किसी भी सफल-सिद्ध पुरुष का नाम नहीं गिना सकता जिसने अपनी सारी सफलता पायी पर उस के मूल में बुद्धि द्वारा भरपूर विचार विवेचन और कठिन परिश्रम नहीं रहे। किंतु यह मैं फिर भी बड़े आग्रहपूर्वक कहूंगा कि जीवन में छोटी या बड़ी सफलता जिस व्यक्ति ने भी पायी उसकी सफलता का रहस्य बहुत बहुत अंशों में उस की सहज प्रेरणात्मक कार्यशीलता में था। बुद्धि की भूमिका निश्चय ही रही, पर समूचे विचार और चेष्टा क्रम में जो निर्णायक चरण हुए वे सहज प्रेरणा का ही सुझाव थे।

और हम में से कितने कितने है जो नित्य ही नहीं बल्कि हर घड़ी अपनी सहज प्रेरणाओं का निर्ममता से दमन किया करते हैं, और यों जीवन को स्वाभाविक रूप और दिशा लेने से रोक कर इधर उधर ले जाते हैं। ये प्रेरणाएं कभी घोषणा के साथ या किसी तैयारी पर नहीं आती। जब भी हो, ये बिजली की तरह बन एक क्षण को कौंधती है। हमने उसी क्षण उन्हें ग्रहण कर लिया तो वे हमारी है, अन्यथा फिर वे रह नहीं जाती और जीवन जिस ढर्रे भी चलता है वैसे चला जाए।

पर ऐसा करके अपने अन्तर्मन के साथ हम सचमुच कितना अन्याय करते है और हमारे ही लिए वह कितना महंगा बनता हैं। क्योंकि वास्तव में ये सहज प्रेरणाएं ही तो है जो हमारे अशन मानस और कर्मठ जीवन के बीच का सम्पर्क-माध्यम है। इस में अत्युक्ति नहीं कि अपनी किसी भी ऐसी अनुभूति या प्रेरणा को बिना खिले मुरझा जाने देकर हम अपने ही विकास का एक सुनहला अवसर अपने हाथों खो देते हैं। परिणाम यह कि फिर संकट के क्षण हमारे अन्दर न दृढ़ता होती है न तत्परता से कुछ कर सकने की शक्ति।

बड़े-बड़े पदाधिकारी, वे चाहे उद्योग-व्यापार के संचालक हो, चाहे राज्य तंत्र के, आज बड़ी बड़ी मेजों पर और कई कई टेलीफोनों से घिरे जो दिखाई पड़ते हैं तो इसीलिए कि अब तक की यात्रा में वे अनेक बार अपनी सहज प्रेरणा पर चले, इसलिए नहीं कि उन्होंने पग पग पर खूब सोचा-विचारा था और निरन्तर कठिन परिश्रम किया था। आज के उद्योग-व्यापार जगत में तो कोई संस्था न होगी जहां ऐसे व्यक्ति न हो और जहां विशेष सफलताओं का रहस्य ही सहज प्रेरणा के पालन में न हो।

कहा जा सकता है कि बुद्धि और तर्क शक्ति मनुष्य को मिली है तो उपयोग के लिए हो। उन का भला और पूरा उपयोग न करने से ही जीवन में हम क्षति और क्लेश का आखेट बनते हैं। ऐसा हो सकता है, पर सच्चाई यह भी है ही कि इस क्षति और क्लेश से कहीं भंयकर क्षति और क्लेश सहज प्रेरणा की अवहेलना से पहुंचता है। नैपोलियन, शिवाजी, प्रेसिडेंट कूलिज और गांधी के जीवन इतिहास साक्षी है कि अपने अन्तर्मन की प्रेरणा पर चल कर ही उन्होंने कितना कितना उपलब्ध किया और उसे अपना कर अपनी ही नहीं बल्कि देश की भी कितनी कितना क्या दिया। एक भद्र महिला का उदाहरण है कि पति से थोड़ा मन-मुटाव हो जाने के बाद कई बार उनके मन ने पुकारा कि पति को यों ही टेलीफोन पर कर लें तो, जैसा बाद को जाना भी गया, सब कुछ ठीक हो जायेगा, पर उन्होंने नहीं किया और उसका मोल चिर-वैधव्य के रूप में लिया।

अनेक बार बहुतों के जीवन में ऐसा होता है कि कोई भी महत्वपूर्ण पग उठाते समय मन 'करूं' न 'करूं' की द्विविधा में झकोले खाने लगता है। कभी-कभी यह अन्तर्द्वन्द्व बड़ा भीषण हो उठता है। पर हर बात के ही तो सदा दो पहलू होते हैं, इसलिए किसी विषय पर हम जितना ही सोचेंगे उतना ही ऐसा लगता जाएगा कि दोनों ही पक्षों में समान बल है। इसका अन्त परिणाम यह होगा कि हम उलझ कर रह जायेंगे। इसके स्थान पर यदि हम अन्तर्प्रेरणा पर चलें तो यह सारी उलझन उपजे ही नहीं और हम निष्क्रिय भी न होने पायें।

वास्तव में आत्म-सिद्धि की एक अदम्य भावना प्रत्येक मनुष्य में हर समय वर्तमान रहती है। उसे हम किसी भी मूल्य पर कुण्ठित न होने दें और यथासम्भव अपने प्रत्येक कार्यव्यवहार में उसके संचालक संकेतों को महत्व दें। यह सहज प्रेरणा का मार्ग जोखिम से खाली नहीं, पर तब जोखिम तो बुद्धि और तर्क के सुझाये मार्ग जाते भी आती ही हैं। बहरहाल अधिक नहीं तो अपनी विश्वसनीय प्रेरणाओं पर तो आरचण करें ही। अनेक जन इस मार्ग चल कर समृद्ध हुए हैं, हम भी क्यों न हो?●

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चार छोटी कविताएं

भाषान्तर : डा. गणेश राठी (रानीगंज)

१.

फूल छुपोड़ो बनरी छवांयां,
खुशबु बिखरे दच्छन हवा मां।

२.

आसमान की रोशनी छुप धरती रे माय,
फागन आर्या पुष्प बण बृच्छ बृच्छमां छाय।

३.

आकाश मेवड़ो बण चुमै,
धरती कुसुम उगा झुमै।

४.

डरते दीपरे धरोसेरे तांई,
रजनी हजारां लाखां तारा जमाई।

ना, वो घर जंवाई कोनी हूयो

✍ गुलाब चन्द कोटड़िया, चेन्नई

मां जमूना अर बेटी सरस्वती। बाप मरियो जणे सरस्वती सात बरस री ही अर गांव री स्कूल मांय पढ़ती ही। घर मांय गरीबी रो वासो। दोपहर भोजन स्कूल मांय मिलणो रे लालच मांय सरस्वती स्कूल जावंती पण ही वा हशियार चंचल अर फडन्दी। बाप की घर मांय जका पूंजी छोड़ नीं गयो हो। हां सिलाई री मसीन जरूर मोलाय ली ही। अमूना रो काम वण स्यूं सिलाई करती और धाको धकतो। थोड़ो बौत आड़ौस पाड़ौस वाला बुलाय'र काम कराय देवता वा भी कोई काम रै खातिर किन्नेई ना नीं केवती। जमुना रो देवर गोरख बीच सदा तिये-छक्के रो बैर हो। कठैई भुजाइसा रूपिया नीं मांग ले वण डर स्यूं वो सदा छिटक्योड़ो अलग ईज रेंवतो। भाई जीवता हा तद भी को नीड़े नीं आंवतो। गरीबी आ अमीरी रो आन्तरो सदा बिणियां रेवै। यद्यपी बड़ो भाई कदई रूपिया या सहायता नीं मांगी पण मांग तो सकै वण री गुंजाइश तो रैय जावती न ? सो वंदो वेली ईज नाता तोड़ राख्या हा। थो रसिक मिजाज। सुरू सुरू मांय खेराणी होंवते ह'र भी जमुना पर डोरा डालिया हां। बुरी आंख्या लुगाया सुं छिप्योड़ी नीं रेवै पण जमुना पतिव्रता सीधी ही अर वण री चालण नीं दी। चिड़िया हाथ नीं लागै था अंगूर खाटा है सोच'र रेवै भी पीछो छोड़ दियो हो आ बात जमना कदैई किन्नेई कई नहीं न बात रो बतंगड़ बणायो सो बांधी मुट्ठी लाख री रैयादी ही पर वा त्योंहार आवता जावता। देवराणी रा जिठाणी स्यूं मधुर सम्बन्ध हा। वा उण री इज्जत भी करती अर अन्दरूनी पेटे सहायता भी कर देंवती। सरस्वती उपर तो वा जीव देंवती।

सरस्वती दसवीं पास करी जितै जवान हुयायी। अई भी भारत री लड़कियां जल्दी ईज जवान हुवै। गरीब री बेटी रूपाली। सरस्वती कांई ज्यादा ईज सोवणी अर मोवणी ही। बात्यां करणै मांय चतुर ही। बौत दूर री सोचती। गरीब रै घर मांय फूठरी छोरी हुवै जो दूर-दूर सं रिस्ता आवण लाग जावै। जमुना ने वण री चिंता खाय रैई ही। हाथ सांय काणी कौड़ी नी अर बेटी रा हाथ पीला क्यान करस्यूं ? ब्यांव खर्च कठै स्यूं आसी दायजे उपर बात ठस जावंती। बा आवणवाला ने सदा देवर गोरख ने पूछो करनै टाल देवती। गोरख ने अड़ियल रूप रे अर सुभाव रै कारण लोग वण खन्ने जावणो पसन्द लीं करता अर कोई हिम्मत कर जावतो भी तो वो टक्को सो जवाब देय देवतो क आप वण री मां ने ईज पूछो वा खुद निरणय लेवणवाली है। म्है इण मगजमारी मांय नीं पड़ूं। कोई उगणीस बीस होयग्यो तो कुण जिम्मेवारी लेवे ? जमुना मन मांय कट'र रैय जावंती। वा देवराणी रमा कन्नै भी गई अर अण काम मांय ने आगे बढ़ावणै बात करी। रमा आपरे धाणीं ने खूब समझायौ क आपांणै परिवार मांय थां ईज बड़ा हो सो सरस्वती रे वर रो चुणाव करल्यौ पण गौरख तो पुदेणी गांठ बांध राखी ही सो टस स्यूं मस नीं हुयौ। वण रै कन्नै एक ही जवाब हो-भाई जीवतै कदैई थळकण नीं चढ्यौ न म्हैं बठै जाऊं इण भागड़ मांय नीं पड़ूं। भुजाई जाणै अर वणारो काम जाणै।

'आपरा भाईसा है न हीं तो आपरो भी कीनो करतव्य बणै है न कि आप पहल करो। भाईबंदो सूं ईसो विवहार कांई आछो लागै ?'

'आछो लागै क बुरो म्हैं इण पचड़ै मांय नीं पड़ूं जठै बा चावै परणा सकै।'

'तो भी अपने आगै रेय'र काम तो देखणो पड़सी न ?'

'तब री तब देखूला' केयर'र आपरो पूरा पल्लो झाड़ लियो। बो सोच्यौ क जिण लुगाई खन्नै दो टाईम रोटी खाणै रा पीसा भी नीं है वा कांई ब्याव खर्च उठावैला।

जमुना देवर रो रैवयो देख दुखी मन सुं लौट आई बेचारी कांई कर सकती ही ? सगला म्हांरी किस्मत रो दोष है। सरस्वती ओ खिलको रोज देखती। समझदार ही सो मां ने धीरज देंवती क थूं फिकर मत कर। समय आणै स्यूं म्हारो वर भी आय जावैलो। पैल पौत तो म्हें ब्यांव ईज नीं करणी चांवु अर परायै घरै गई पछी तो थारी देखभाल सार सम्भाल कुण करसी। किणरै भरोसे थन्नै छोड़स्यू बता तो भला। काकोजी ने तो म्है आजस्यूं नहीं टाबर पणै सूं देख रैयी हूं। बण रै आचरण मांय कांई बदलाव नीं आयो न आवैळा। वणां रै वास्ता पैसा ईज भगवान है। वै संबंध ईज नीं राखण चावै तो बणां सूं क्यूं खोटी आसा राखणी।

इण बात्यां मांय दो साल गुजरग्या। सरस्वती रै रूप री चर्चा चौड़े चौगान हुवण लागी। अबै तो अमीर घरां सूं भी रिस्ता आवण लाग्या। वे धनी हा क सगळै ब्याव रो खर्च म्हां उठा लेवांगा। म्हानै तो सरस्वती जिसी बहू री दरकार है। रिस्ता भी अच्छा हा। इण मांय केई दूज वर हा तो केई तलाकसुद भी हा जमुना तैयार हां भरण मांय हुवंती तो सरस्वती इनकार कर देवंती अर इसी शर्त लगावती क वर रे घरवाळा जावता परा। सरस्वती मां ने कैयो-म्हैं केवुं न म्हांरी फिकर नीं करणी। म्हनैं नी थोड़ा सोचण दे। म्हैं म्हारै वर रो चुणाव खुद कर लेस्यूं।

'बेटी थूं जवान है ईसो बीसो कांई होगे तो समाज मांय मूडो भी नीं दिखा सकांगा।'

सरस्वती दृढ़ स्वर मांय केंवती- 'मां थारी बेटी रे कांई नीं हुवै तू निश्चित रै। अबै कोई रिस्तेवालो आवै तो म्हैं खुद बात कर लेस्यु।'

'राम राम बेटी सूं कोई बात कर रेई है थन्नै की ठा परै इसी निरलज्जपणो आपारै समाज में नीं चालैं।'

'सब चालै मां सब चालै। आज जिण समाज री बात कर रैई है वा समाज मांय छोरियां रो टोटो पड़ायो है। हजार मिनखां लारै नौ सौ सताइस लड़कियां ईज है। वण कारण ईज अमीर घरवाला फांका मारै नीं तक क्यूं बैं गरीब घरारू देखे भला।

हवा उलटी बैय रेई है। म्हैं कांई काणी कूबड़ी, लूली लंगड़ी हूं ? क्यूं इसी जल्दबाजी करै अबै छोरेवाला री शर्ता नीं चालै वधू घर वालां री चालैला।'

जमुना बेटी री आधुनिक हवा री बात सुण चुप रैय जावती। धनी घर स्यूं रिस्तौ आवंतो तो सरस्वती खुद वण स्यूं बात कीणी अर वण री बात्या सुण बै भाग छूटया। कुकुं कन्या वाली एक साड़ी मांय विदाई बात सगळा मंजूर कीणा पण बात सुण मुंडो पिल्को कर लेवता। जमुना रीस स्यूं भरीज जावंती पण सरस्वती वण री चालण नीं रेंवती। सरस्वती केंवती क म्हैं लड़के स्यूं अलग बात करणी चावुंली ताकि एक इजै ने परख सोच समझ'र रिस्ता कर सकू। घर मांय नी बात हुवैला। मिंदर मांय लड़के सूं कोई बात करनी क लड़के वाला वापिस कदैई नीं फुरता।

जमुना कैयो- 'तो अबै लड़की-लड़के नै पसन्द करैला ?'

सरस्वती कैवती और नहीं तो कांई।

सरस्वती री सुफलता रो दिन भी आयग्यो। इण बार रिस्तौ बौत बड़े घरस्यूं आयौ। लड़के नै पसन्द आवै जिसी लड़की ही लड़के रे माता-पिता नीं हां। इण रो रिस्तै रो भाई सगलो काम संभालतो हो। लाखों करोड़ों री सम्पत्ति रो एकलो मालिक। कोई सम्भालण वालो नीं। विदेश मांय पढ़यो लिख्यो। वठै पढ़ती टेम एक अमरीकन छोरी स्यूं प्यार होयग्यो हो वा वण नै धत्रो बताय दीयो जिण स्यूं वण रो दिल टूटग्यौ हो। सो आपरी जिनगी स्यूं निरास भी हो। लड़को रो नाम शंकर हो। वण री मामी वण नै समझायो बेटा। आपां हिन्दुस्तानी हां तूं आपां रै समाज री लड़की चुण थारो घर अर थत्रै भी सम्भाल लेसी। विदेशी लुगाइयां री भांत ने उछखलता नी हुवै। म्हांरी बात मान। सरस्वती री बात म्हें सुणी बड़ी सुदृढ़ चरित्रवाली छोरी है। समझदार भी है। म्हैं थारे लिए बात चला दी है थूं एक बार वण स्यूं मिल लै। वा थत्रै पसंद आवै तो म्हें बात पक्की कर लेस्यु।

इण भांत मिंदर मांय दोन्यु जणां मिळया। मिळते पाण सरस्वती स्पष्ट पूछयो- 'आप इतरा पीसेवाला सुखी सम्पन्न हुंवतै गरीब घर री लड़की लावणी क्यूं चावौ क जिका थारी जिसी भणियोड़ी भी नीं है ?'

'म्हनै गुणी लड़की पसंद है अर थारी प्रशंसा म्हांरी मामीसा खुद करी है।'

'ठीक है तो बतावौ म्हैं थांने पसन्द हूं ?'

'हां ! म्हंने तो बौत पसन्द आई। म्हैं वे सगळा गुण थारे मांय देख रैयो हूं जो एक सुधड़ परणी मांय हुया करै। म्हनै विश्वास है क थूं म्हारै घर री शोभा बण सकै।'

'थारी पुराणी प्रीति तो नीं जागै न ? क्यूंक थारी मामीसा वो किस्सो भी म्हंनै कैय दीयो हो। खुलै मन री बात सदा भली हुवै।'

'म्हैं वादो करूं अबै म्हैं बैठे जावुंला भी नीं क्यूंक अबै भारत मांय ईज रेस्यूं। म्हारो सारो बैपार व्यवहार भारत मांय ईज फैलियोड़ो है। वा दुर्घटना बो भणतै टैम घटगी ही।'

'पण एक समस्या है।'

'बोल एक नहीं हजार समस्या हुसी तो भी म्हैं समाधान करणै त्यार हूं। थारी हर शर्त म्हनै बिना सुण्यै मंजूर है।'

'म्हांरी मां...।'

'थारी मां...कांई ?'

बा म्हारै सागै रेवेगी क्यूं क वणनै देखण भालण वाला कोई नीं है।'

बिना झिझक शंकर बोल्यो- अरे ! आ तो म्हारै परव री बात रै। म्हंनै मां भी मिल जासी। इतरै बड़े घर ने थूं एकली क्यान सम्भालसी। थारी मां आपाणै संग रैई तो म्हांरी खुसी दुगुनी होय जासी।'

'साची बात करो के ?'

'सौ टका।'

सरस्वती चहक'र बोली- 'तो दे ताली। हाथ मिलाओ' शंकर ने सरस्वती री आ अदा इत्ती भाई क हाथ मिलाय'र वण नै खुद री तरफ खेंच लियौ।

सरस्वती नम्रता स्यूं कैयौ- 'नहीं ओ मन्दिर है थांरी सरस्वती पवित्र है। पवित्र ईज रैवैला। लोक व्यवहार साजणै जरूरी है। आप कालै ईज रूपयो नारेळ म्हारै घरै पहुंचावो पक्की।

एक महीने रै अन्दर वणरै काकोजी गोरखनाथ ने एक कीमती कुंकुम व्याव री पत्रिका मिली जिण मांय विनीत रै नीचे वणा रो नावं हो वो छकड़गम रैयग्यो। सरस्वती रो ब्यांव वण शहर रै बौत बड़े अमीर रे सागै होय रैयो हो। वण सेठ रै सामने गोरख री हैसियत तिणकै रै बराबर ही। काकी बौत खुश हुई। पूरो परिवार उणरै ब्यांव मांय सहयोग दीयो। काका काकी ईज कन्यादान भी कीयो।

देवराणी आपरै धणी गोरख ने कैयो- 'देखी लुगाइंया री शक्ति थां अब तो मानोला न क था गलत हां।

गोरख कैयो- 'हां ! भई थारी बात सही है। लड़की रा भाग्य बौत अच्छी जाग्या जावणो हो। पण भुजाईसा रो अबै कांई हुसी ?'

जमुना ने घर-सास वाली बात ठा नीं ही। अगर मालूम पड़ती तो शायद प्रतिकार भी करती।

ब्यां रै दस दिन बात सरस्वती अर शंकर एक बड़ी सी कार मांय जुमना ने लेवण सांरू आया अर उठानै बाइज्जत घरै लेयग्या। उणरै वास्ता पूरी व्यवस्था कर दी। जमुना केंवती रैयी म्है बेटी रे घरै नीं रेवुं। शंकर वणरै पगै पड़ग्यौ थां म्हारी सास नहीं मां हो। बेटे रै सागै रेवण मांय कोई गळती है ? सरस्वती अर म्हंनै कुण सम्भालसी केय'र जमुना ने निरूत्तर कर दीयो।

अबै एक बात कैवणी शेष रैय गई। सरस्वती रिस्तो आवंतो जण आ शर्त रखती क घर जंवाई बणो तो म्हैं ब्याव खातिर राजी हो जाउंली। लड़के वाला आ बात सुण'र भाग छुटता। जकै रै घर ईज कोनी वठै कैसो घर जवांई ? टोगड़ी रे सागै बांझ गाय ने कुण ले जावै। कठैई छोरो तो कठैई घरवाळां ने आपत्ति हुवंती बात टूट जावती अर समय आंवतै पांण सरस्वती आपरी सही जाग्या पूगग्यी। बेटी आप करनी हुवै बाय कर्मी नी।●

शिष्टाचार आखिर क्यों ?

✍ सरोज लोधा

शिष्ट व्यवहार न केवल सभ्यता का प्रतीक है अपितु यह आप के हित साधन का अचूक उपाय भी है। शिष्टाचार एक ऐसा शब्द है जिसका असर हम सभी पर रहता है। आखिर यह शिष्टाचार के तौर-तरीके आए कहां से? यहां पढ़िए शिष्टाचार शुरू होने और उनकी जरूरतों के रोचक किस्से।

१८वीं सदी का इंग्लैंड अपने शिष्ट सामाजिक आचरण के लिए जग प्रसिद्ध है। आज भी इंग्लैंड को मोमबत्तियों की मद्धिम रोशनी, शालीन शिष्टाचार और झुक कर हाथों का चुंबन लेते हुए उन दृश्यों को बड़ी शिद्दत से याद किया जाता है। किंतु उस शताब्दी की उन बर्बर वास्तविकताओं का प्राय: उल्लेख नहीं किया जाता जब द्वंद्व युद्ध में किसी की जान ले लेना एक साधारण सी बात थी और भद्र कहलाने वाले पुरुष बेहोशी की सीमा तक पीते रहते थे।

बदलता शिष्टाचार

आजकल साफ सुथरा रहना अच्छा माना जाता है और यह भी सच है कि हम अपने को साफ सुथरा और तरोताजा रखने वाली चीजों पर ढेरों रुपये खर्च कर देते हैं, लेकिन १८वीं शताब्दी में अधिकांश डॉक्टर, पादरी नहाने पर नाक भौं सिकोड़ते थे और स्त्रियों की ऊंची-ऊंची केश सज्जा में जुएं रेंगती थी।

लगातार बदलते शिष्टाचार के तौर-तरीकों पर कोई एक विचार व्यक्त करना कठिन है। उदाहरण के लिए १८वीं सदी में घर के अंदर टोप पहनना ठीक समझा जाता था। किसी महिला का अभिवादन करते समय टोप उतार कर फिर से सिर पर रख लिया जाता था। कारण साफ है कि पुराने युग में टोप, आप के पद और समाज में आपकी स्थिति का सूचक था। दूसरे यदि आपने हाथ में टोप थाम रखा हो तो आप म्यान से तलवार आसानी से नहीं निकाल सकते थे।

इस प्रथा से पता चलता है कि बहुत हद तक शिष्टाचार के तौर-तरीके, किसी न किसी तरह आत्मरक्षा के उपाय से जुड़े हुए हैं। बाद में यह रीति-रिवाज रूढ़ी हो कर प्रतीक का रूप ले लेते हैं। किन्तु इनका मूल किसी न किसी व्यवहारिक आवश्यकता से जुड़ा होता है।

जैसे किसी से मिलने पर हम आपस में दाहिना हाथ मिलाते हैं। हम आज औपचारिकता के लिए सिर्फ ऐसा करते हैं। किन्तु उस जमाने में, जब प्रत्येक व्यक्ति हथियार लिए घूमता था, हाथ मिलाना इस बात की निशानी थी कि मैं हथियार इस्तेमाल किए बिना तुम से बात करने के लिए तैयार हूं अर्थात् हाथ मिलाना शांति बनाए रखने का प्रतीक था। जिसे आज हम शिष्टाचार समझते हैं, वह केवल यह बताने का तरीका था, मैं तुमसे तुरंत लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहता, बशर्ते तुम्हारी भी यही नीयत हो।'

अतिथि को मेजबान के दाहिने ओर बैठाना सम्मान का सूचक है। यह रिवाज प्रचलित होने के बारे में एक मत यह भी है कि दाहिने हाथ से हथियार चलाने वाला व्यक्ति, मेजबान को दाहिनी और बैठ कर उसे आसानी से छुरा नहीं भौंक सकता। अपने किसी विरोधी को सोच समझकर अपने पास बिठाने की जगह, आज समय बीतने के साथ किसी भी महत्वपूर्ण अतिथि के लिए सम्मानजनक स्थान बन गया है। आज हम जितनी भी शिष्टाचार की प्रथा देखते हैं करीब-करीब हर प्रथा के पीछे कुछ न कुछ सावधानी छिपी रहती थी। गुजरे जमाने में मेजबान अपने मेहमानों को पेय ढालने से पहले स्वयं चखता था इसलिए नहीं कि उस का स्वाद ठीक है या नहीं। अपितु यह बताने के लिए इसमें जहर नहीं है। अतिथियों के प्रति मेजबान की यह सद्भावना प्रदर्शित करने के लिए ही चांदी की चमकीली सुराही में पेय ढला जाता था, क्योंकि समझा जाता था, चांदी के बर्तन में रखने से जहर का असर खत्म हो जाता है।

आज भी हम किसी बड़े या महत्वपूर्ण व्यक्ति को दरवाजे से पहले जाने देने के लिए हट कर खड़े हो जाते हैं? ऐसा हम उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए करते हैं। इस शिष्टाचार के बारे में कहा जाता है कि मध्य युग में सबसे अधिक शक्तिशाली पुरुष का किले से, सबसे पहले निकलना इसलिए उचित माना जाता था, क्योंकि उस वक्त हमेशा यही आशंका रहती थी कि उसकी मुठभेड़ सशस्त्र विरोधियों से होगी। धीरे-धीरे ऐसे व्यक्ति की स्थिति सम्मानजनक मानी जाने लगी, यह समझा जाने लगा कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति ही सबसे अधिक शक्तिशाली है।

सभ्य और शिष्ट आचरण, समाज के व्यवहार को सुचारू ढंग से चलाने के उपाय हैं। यदि हम एक दूसरे के प्रति आदर प्रकट न करें तो गुस्सा भड़कने लगता है और बिना बात लड़ने झगड़ने लगते हैं। इसके अतिरिक्त शिष्ट आचरण इसलिए भी उचित है कि आप के क्षण भर के लिए छोड़े शिष्ट व्यवहार के कारण आसपास के लोग समझ जाते हैं कि आप नाराज हैं।

शालीन व्यवहार करने वाले व्यक्ति अधिकांश परिस्थितियों में अशिष्ट व्यक्तियों की अपेक्षा, कही अधिक सफल रहते हैं। उदाहरण के लिए शिष्ट आचरण के बिना समझौते की अधिकांश बातें शुरू ही नहीं की जा सकती। इसी से स्पष्ट हो जाता है कि कूटनीतिज्ञ अपने शिष्टाचार के लिए क्यों प्रसिद्ध हैं।

यद्यपि मानव जाति का इतिहास, हिंसा और मारधाड़ से भरा है, किन्तु इसके बावजूद अधिकांश व्यक्ति लड़ाई झगड़े से बचना चाहते हैं और शिष्टाचार ही लड़ाई झगड़े टालने का एक मात्र उपाय है। शिष्ट व्यवहार, बर्बरता पर सभ्यता की विजय का और अपने हित साधन के लिए बुद्धिमतापूर्ण व्यवहार का प्रतीक है। आज के दौर में सभ्य आचरण, कमजोरी का प्रदर्शन नहीं अपितु समझदारी की निशानी है।●

बहुत घातक है दिखावे की प्रवृत्ति

✍ हरी प्रसाद अग्रवाल

समाज के सुपरिचित एवं उद्योगपति श्री हरि अग्रवाल कहते हैं कि किसी समर्थ व सक्षम व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह असहायों को सहारा दें, गरीबों की मदद करे और गिरते हुए को उठाने की कोशिश करें।

समय की तेज रफ्तार के साथ-साथ सामाजिक परिदृश्य बदला है, मान्यताएं और परंपराओं के अर्थ बदले हैं। सांस्कृतिक ढांचे का रूप भी बदला है लेकिन बदले हुए माहौल में एक अच्छी बात नजर आ रही है। वह यह है कि शिक्षा के प्रति युवा पीढ़ी में आकर्षण बढ़ा है। हमारे समाज का युवा वर्ग अच्छी से अच्छी शिक्षा हासिल करने की कोशिश कर रहा है, उनमें बुद्धिमत्ता और प्रतिभा का स्तर बढ़ा है जिससे अच्छे परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। एक जमाना वो भी था जबकि महिलाएं घरों में ही कैद रहती थीं, ना तो उन्हें शिक्षा हासिल करने की पूरी छूट थी और न ही सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की इजाजत दी जाती थी लेकिन आज की स्थिति ठीक विपरीत है। खासकर समाज की महिलाएं पढ़ लिख कर सामाजिक जीवन के हर पहलू में अपनी काबलियत का एहसास करा रही हैं। महिलाओं का समाज सेवा के क्षेत्र में आना एक अच्छा संकेत है चूंकि हिन्दू समाज की वह प्रबल मान्यता है कि महिलाएं जिस काम को हाथ में लेती है वो पूरा ही होता है। आजकल देखने को मिल रहा है विशेषकर मारवाड़ी समाज की संपन्न व सुशिक्षित महिलाएं सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से समाज सेवा के काम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही है।

पहले के मुकाबले युवा पीढ़ी में धार्मिक भावना बढ़ी है, खासकर युवा वर्ग धार्मिक अनुष्ठानों में अपनी इच्छा से भाग ले रहा है। सामाजिक संस्थाओं मे भी युवा पीढ़ी जुड़ रही है, लेकिन इसके साथ ही समाज सेवा हो या धार्मिक कार्यक्रम हो दोनों में ही दिखावा जरूरत से ज्यादा दिख रहा है जो कि अच्छा संकेत नहीं माना जा सकता। संस्थाएं बढ़ी है और काम भी हो रहा है लेकिन दिखावे की प्रवृत्ति घातक भविष्य का संकेत दे रही है। दरअसल उद्योग व्यापार की तरह समाज सेवा के क्षेत्र में भी प्रतिस्पर्द्धा बढ़ गयी है। स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा अच्छी होती है लेकिन अगर सिर्फ प्रतिस्पर्द्धा इसलिए हो कि हमें भी किसी संस्था का पदाधिकारी बनना है तो इसका कोई अर्थ नहीं है। कोलकाता महानगर की आबादी काफी बढ़ गयी है इसलिए संस्थाओं का बढ़ना जरूरी है जिनके माध्यम से समाज के गरीब, असहाय और दबे कुचले लोगों का भला हो सके। धार्मिक अनुष्ठानों में धन खर्च करने की होड़ लग गयी है जिसका कोई मतलब नहीं है। अगर यही पैसा बचाकर गरीबों की मदद में लगाया जाए तो क्या अच्छा नहीं होगा? दिखावा और आडम्बर की बढ़ती जा रही प्रवृत्ति को हर हाल में रोकना होगा अन्यथा एक न एक दिन यह प्रवृत्ति हर किसी को बुरी तरह से झकझोर कर रख देगी। समाज में पहले जैसा प्रेमभाव एक दूसरे की मदद करने में और सुख दु:ख में खड़े रहने की भावना घटती जा रही है जिस पर समाज के अग्रणी लोगों को गंभीरता से विचार करना होगा, क्योंकि कोलकाता का सामाजिक परिदृश्य हमेशा से अपनी एक अलग पहचान रखता रहा है। संस्कृति, संस्कार, शिक्षा, साहित्य और संगीत के लिए पश्चिम बंगाल और कोलकाता महानगर पूरे देश में सदा से मशहूर रहा है। अगर हमें अपना पुराना गौरव बरकरार रखना है तो सांस्कृतिक ढांचा को मजबूत करना होगा। सांस्कृतिक ढांचे सिर्फ किताबी शिक्षा से ही नहीं मजबूत होगी बल्कि इसके लिए मां-बाप को बच्चों में शुरू से ही संस्कार डालने लगे। अहम की भावना और सहनशक्ति के अभाव में समाज और परिवार में झगड़े बढ़ रहे हैं और आपसी तालमेल घट रहा है। युवा पीढ़ी को इस बारे में गंभीर चिंतन करना चाहिए और यह बात ठीक से समझ लेनी चाहिए कि समझौते की प्रवृत्ति और सहनशक्ति के बगैर सामाजिक जीवन में मिलजुल कर चलना असंभव है। हिन्दू समाज को समाज सेवा के काम में तेजी से आगे आने की जरूरत है। जो जिस लायक है उसे सहयोग करना चाहिए। नदी, नालों, पहाड़ों और जंगलों के इर्द-गिर्द रहने वाले लाखों की तादाद में हमारे वनवासी भाई आज भी दुनिया की चकाचौंध और आधुनिकता से कोसों दूर रोटी, कपड़ा और मकान के लिए जुझ रहे हैं। इन वनवासी भाइयों की मदद कर समाज की मुख्य धारा में जोड़ना हम सबका कर्त्तव्य बनता है। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व में आशा हुई है कि आने वाला समय बंगाल के लिए औद्योगिक दृष्टि से सुनहरा होगा क्योंकि बुद्धदेव बाबू ने पिछले कुछ सालों में उद्योग व्यापार बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक कदम उठाये हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि वाममोर्चा सरकार की सोच में व्यापक पैमाने पर बदलाव आया है लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि बुद्धदेव भट्टाचार्य बंगाल की तरक्की की राह पर तभी ले जा पाने में सक्षम होंगे जबकि इनकी पार्टी इनका साथ देगी।●

हम जीवन से हार न माने

जगदीश प्रसाद 'तुलस्यान'
मुजफ्फरपुर, बिहार

हम जीवन से हार न मानें, अपने तो हो गये बेगाने,
अंधकार में भटक रहे क्यों, भावों की परछाई जाने।
मोह जाल में फैला हुआ मन, अपने होंगे कई ठिकाने।
वर्तमान में झांक रहे क्यों, हम प्रकृति को पहचाने।
दु:ख तकलीफ से क्या घबड़ाना, अंतर मन बाते माने,
सुलग रहा है जीगर बराबर, आओ यज्ञ आहूती देवे।
सुरठा का प्रतिबिम्ब सामने, और चन्द्रमा की परछाई,
मंजिल एक हमारी होगी, विघ्नों को हम ना दे आने।
बर्जभूमि भारत है अपनी, हिमगिरी की महिमा महचानों,
आनेवाला कल कहता है, अपने भी अब बने ठिकाने।
अंतिम विजय हमारी होगी, आदर्शों की व्यथा अलग है,
कालदूत से क्या घबड़ाना, महाकाल के हम दिवाने।
लक्ष्य सामने आज हमारे, हम विरक्तियों को पहचाने,
कौन हमारा अपना होगा, हम कहलाते हैं दिवाने।
भुल-भुलैया में खोया मन, तुलस्यान अब तक अनजाने,
एक अधूरी अनुभूति है, आन्दोलित हम हुए सयाने।

महत्वाकांक्षी मानव : मानव जीवन के मूल तत्व

✍ डॉ. मंगलाप्रसाद, महामंत्री, कलकत्ता, गांधी दर्शन समिति

मनुष्य एक महत्वाकांक्षी प्राणी है, यह उसका स्वाभाविक गुण है। किन्तु जब किसी बात की अधिकता होती है, तब वह 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' की भांति हो जाता है। किसी भी वस्तु की अधिकता उसके विनाश का कारण है, इसीलिए कहा गया है कि उसे बढ़ने न दें। राष्ट्र, समाज और परिवार सभी में मनुष्य की महत्ता है, लेकिन उसकी अपनी सीमा भी है। मनुष्य अपरिमित गुणों से भरा ही क्यों न हो, उसे अपनी सीमा का ज्ञान होना आवश्यक है। उसका उलंघन उसके विनाश का कारण बन जाता है। कहा गया है- ''अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप। अति का भला न वर्षना, अति की भली न धूप।''

आज स्थिति कहीं-कहीं ऐसी है कि कोई भी साधारण व्यक्ति स्वयं को असाधारण व्यक्ति मानने लगता है। वह सामान्य लागों को घृणा की दृष्टि से देखता है, उनके साथ मिलने-बैठने में अपमान का बोध कराता है। इतना ही नहीं, यदि वह साधन सम्पन्न व्यक्ति है तो उसे प्रत्येक व्यक्ति मंगता ही नजर आता है और वह उसे अपने पास तक आने नहीं देना चाहता। यही बात संप्रति राजनेताओं के साथ भी है, वह जिनके द्वारा नेता बनते हैं, उनसे ही मिलने में उन्हें आपत्ति होती है। कुछ चाटुकार भी उनसे (नेता) न मिलने देने में सहायक होते हैं, जब तक उनका उस व्यक्ति से कोई स्वार्थ न हो। साधारण प्रतिष्ठा पाने के साथ ही उन्हें छपास रोग भी लग जाता है और वह समाचार पत्रों में अपना नाम तथा फोटो नित्य प्रकाशित करना चाहते हैं, वह भी पैसे देकर। महत्वाकांक्षा का यह घटिया तरीका उनके लिए ''स्वान्तः सुखाय'' हो सकता है, लेकिन बुद्धिजीवियों की नजरों में उनका यह भौंडा प्रदर्शन महत्वहीन है। आजकल देखा गया है कि लोग अपना अभिनंदन स्वयं के पैसे देकर कराना चाहते हैं, अच्छी और वैचारिक संस्थाओं के पास इस तरह के कई ऑफर आते हैं जिसका पालन उनके लिए संभव नहीं होता। वैचारिक संस्थाओं का अपना कुछ उद्देश्य होता है, वह जिस स्थिति में होती है, उसी में वह आनंदित हैं।

भारत के अधिकांश समाचार-पत्र अब समाचार-पत्र नहीं रहे। समाचार-पत्रों का व्यवसायीकरण इस बात को प्रमाणित करता है कि वह अपने समाचार-पत्रों द्वारा रोमन लिपि को बढ़ावा दे रहे हैं। गुठखा, पान मसाला, सिगरेट तथा अन्य ऐसी नशीली वस्तुओं के विज्ञापन वह स्वीकार करते हैं, जो त्याज्य और वहिष्कार योग्य है। नागरी लिपि का स्थान यदि रोमन लिपि ने ले लिया तो हिंदी की क्या स्थिति होगी, सोचनीय है! हिन्दी के समाचार-पत्रों द्वारा उसका विरोध किया जाना चाहिए, अन्यथा यह अंग्रेजी अक्षर हिंदी और नागरी लिपि को निगल जाएंगे। भारत की अन्य किसी राज्यभाषा का ऐसा रूपांतर नहीं किया गया है, जैसा कि हिंदी के साथ किया जा रहा है, जबकि यह राष्ट्रभाषा है। यह कार्य अभी विज्ञापनों से आरम्भ हुआ है, जो बाद में लेखनशैली में भी आ सकता है।

कहना न होगा, सभी कार्यों में प्रशासन दोषी नहीं है, हमें भी अपने कर्तव्य और नैतिक आचरण के प्रति सावधान रहने की जरूरत है। व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र का स्तंभ है, उसे स्वयं को अनुशासित रहने और उसके मूल्यबोध का ज्ञान आवश्यक है, तभी हमारी महत्वाकांक्षा सार्थक हो सकती है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनी सभी प्रार्थना सभाओं में साधन की शुचिता, चरित्रोत्थान और मानवीय कर्तव्य के प्रति सावधान रहने की बात कही थी। वह जानते थे, इसके अभाव में कोई भी राष्ट्र, समाज तथा व्यक्ति विकसित नहीं हो सकता। मानव जीवन के यह मूलतत्व हैं, जिसका ज्ञान सभी को होना चाहिए। वह दूरदर्शी और ज्ञानी थे, उन्हें भविष्य का अंदाज था।●

जीवन की किताब

✍ रंजू मोदी, अंगूल

जीवन एक किताब है। एक जिल्दबंधी किताब जिसके अदृश्य अक्षर आंखों से दिखाई तो नहीं देते पर वे ही अक्षर न जाने कब घटनाओं के अनचाहे अमिट वाक्यों का रूप लेकर उम्र के बिन बुलाए पड़ावों के अध्याय बन जीवन की अजीबों गरीब किताब की शक्ल दे देते हैं।

जिन्दगी की इस किताब के प्रथम आवरण पर चमकीले अक्षरों में अंकित है जीवन और द्वितीय आवरण पर काले अक्षरों में लिखा है मृत्यु। कुछ अभागे ऐसे भी है जिनके जीवन की किताब खुली है तो अंतिम आवरण नजर आ जाता है कई को कटे-फटे पन्नों वाली किताब नसीब होती है तो कई की किताब का हर पन्ना आंसुओं और अंगारों के अक्षरों से लिखा होता है- कुछ पन्नों के अक्षर वैभव-विलास के रंगों से चमकते रहते है तो कई किताबों शौर्य, साहस और रोमांच के कारनामों से जगमगाती है। जिन्दगी की हर किताब अनूठी है। नियति के अद्भुत संपादन की विशेषता यह है कि किसी भी किताब का कोई पन्ना किसी दूसरी किताब से मेल नहीं खाता।

कई किताबें इतनी छोटी है कि एक अध्याय पूरा नहीं हो पाता कि किताब खत्म हो जाती है और कुछ किताबें इतनी मोटी होती है कि इन्हें पढ़ते-पढ़ते लोग उब जाते हैं और यह मानने लगते हैं कि कब यह किताब खत्म हो और उन्हें इस संसार रूपी पाठशाला से छुट्टी मिले।

नियति की निरंकुश सत्ता ने कोई भी किताब आधिकारी नहीं बनाई। कहीं न कहीं कोई कमी कोई खोट, कोई गलती अवश्य रह गई। तो वे कौन है जिन्हें दुनिया महात्मा कहती है बापू या चाचा कहती है क्या ये किताबे नियति ने अपवाद स्वरूप बनाई थी जो कहीं नियति ने तो इन किताबों के पन्नों पर भी कुछ सुख कुछ दुःख की कुछ आंसू भरी कुछ मुस्कान भरी कुछ फूलों की कुछ अंगारों की कथाएं लिखी थी। पर इन महापुरुषों ने पुरुषार्थ और तेज की कैंची से तो सारे पन्ने काट डाले जिन्हें साधारण लोग काट नहीं पाते और ऊंचे सीढ़ी पर चढ़ने से वंचित रह जाते हैं।●

एक सौ पैंसठ वर्षीया नार नवेली डूण्डलोद की खुर्रेदार हवेली

✍ डॉ. तारादत्त ''निर्विरोध'', जयपुर

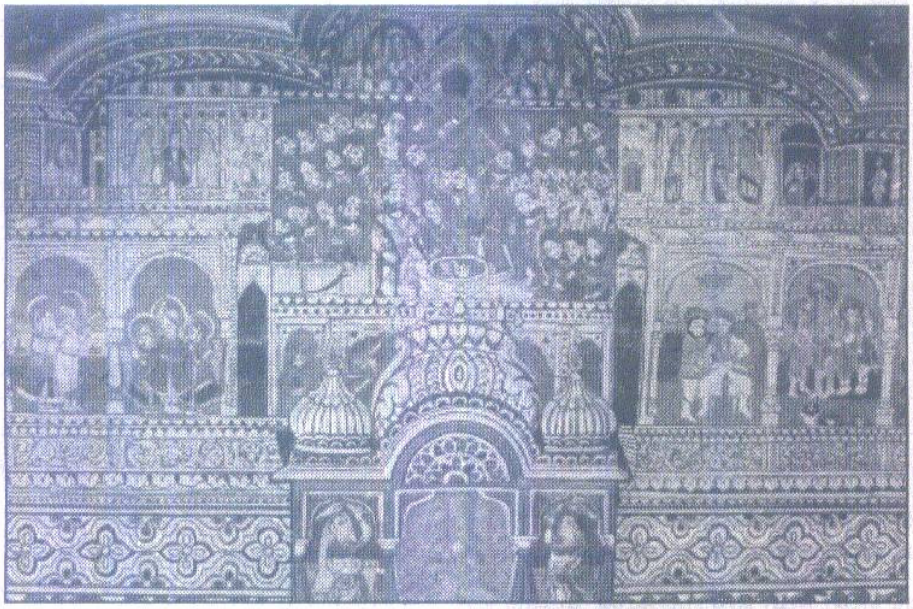

डूण्डलोद - राजस्थान की खुर्रेवाली गोइन्का हवेली

आप यह पढ़कर आश्चर्यान्वित होंगे कि कोई एक सौ पैंसठ वर्षीया नार भी नई नवेली होती है और कलात्मक भव्य हवेली हो तो क्या वह इतने वर्षों की आयु पाकर अपना लावण्य बनाए रख सकेगी ? किंतु यह नितांत सच है कि शेखावाटी-राजस्थान के डूण्डलोद में एक ऐसी हवेली है जो एक सौ पैंसठ वर्षीया होने के बावजूद आज भी नव्यता लिए हुए है।

एक ऊंचे खुर्रेदार इस हवेली के पार द्वार तक पर्यटकों की दृष्टियां टिकी रहती है और वे इसके द्वार और द्वार के बाद भीतरी द्वारों की बनावट तथा उन पर पीतल की पत्तियों को देखकर कहीं कुछ तलाशते रहते हैं। गोयनका हवेली के नख-शिख ऐसे हैं कि एक बड़ी देहयष्टि को सुगठित देखकर चकित रह जाते हैं विश्व के तीस देशों के पर्यटक। मुख्य द्वार के सामने से घुमावदार खुर्रे से चढ़ते हुए पर्यटक यह भी सोचते हैं कि जिसने एक बड़ी देह-यष्टि को आकर्षक नख शिख दिए हैं और उसके अंगों को अलंकृत किया है, उसकी सोच पुराने जमाने में भी कितनी नई रही होगी।

हवेली की संस्कृति ऐसी है कि उसके सभी संस्कार इस भव्य निर्माण में बड़े सहायक रहे हैं। रंग संयोजन, उकारे गए चितराम और विषयगत रेख-रंगों के समन्वय सभी पर्यटकों को सोचने पर विवश करते हैं।

''खुर्रेवाली हवेली'' के नाम के सब कहीं प्रसिद्ध चर्चित और जुबानों पर चढ़ी यह गोयन का हवेली सम्मोहक तो है ही, यह पर्यटकों को अभिवादन करके उन्हें भीतर आने का निमंत्रण भी देती है। जमीन से दस फुट की ऊंचाई पर बनी यह दुमंजिली हवेली शेखावाटी की चित्रकारी शैली की परिचायक है जिसके बाहरी चौक में दोनों ओर दो खुली बैठकें बनी हैं जिनका स्वरूप आत्याधुनिक स्वागत कक्षों जैसा है। कोड़ियों से घिसाई की गई भत्तियों के कारण उनका पलस्तर आज भी चमकदार है और उसने एक अन्तराल तक लम्बी आयु जीने के बाद भी अपनी चमक को नहीं खोने दिया है। शेखावाटी की हवेलियों की परम्परा के अनुसार इस हवेली में भी झाड़-फानूस, ऐंटिक्स, प्राचीन चित्र और दर्पणों की भरमार है और यह सब शेखावाटी के धनाढ्य व्यक्तियों की अभिरूचि दर्शाता है। पीतल की चद्दरों से मढ़े और पीतल से बने सांकली कड़े भी अपनी सुदृढ़ता दर्शाते हैं। यों हवेली के साल-तिबारे, द्वारों की चौखटें, पच्चीकारी के कार्य और छतें बताते हैं कि कभी शेखावाटी निवासी बड़े कला प्रेमी थे और उन्हें प्रकृति रंगों के अभाव में अपने ही रंगों में जीना काफी पसंद था।

स्व. सेठ अर्जनदास के परिजन (गोयनका परिवार) आज भी इस हवेली के रख रखाव में विशेष रूचि रखते हैं और

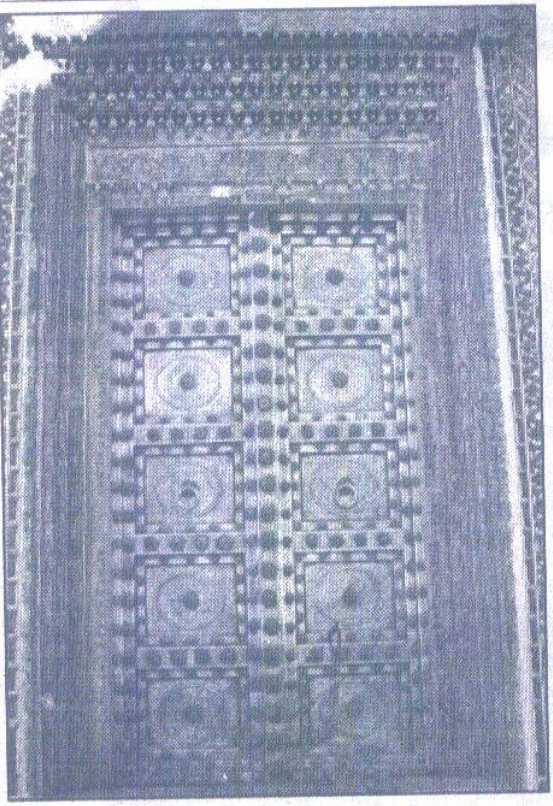

हवेली का पीतल की पत्तियों का सदी पूर्व का द्वार

चाहते हैं यह हवेली बरसों बरस पर्यटकों के आकर्षण का विशेष केन्द्र बनी रहे। हवेली में रंग रोगन और चितराम निर्माण का कार्य निरंतरता लिए हुए हैं।

शेखावाटी में विशाल एवं भव्य हवेलियों की भरमार है और नवलगढ़, मण्डावा, डूण्डलोद, झुंझुनूं, चिड़ावा, पिलानी और सूरजगढ़ में भी बड़ी हवेलियां हैं, सीकर-चूरू में भी। गोयनका हवेली सबसे अलग अनूठी है और इस हवेली के क्या कहने।

हजारों-हजार विदेशी पर्यटक इन हवेलियों की प्राचीनतम चित्रकारी देखने हर वर्ष आते हैं।●

विधु की चांदी की थाली
मादक मकरंद भरी सी
जिसमें उजियारी रातें
लुटती घुलती मिसरी सी।
- महादेवी
'छाया की आंख मिचौनी' से

जिसने कभी चखा ही नहीं दल-बदल का लुत्फ वह क्या जानें

✍ रतन लाल जोशी, मुम्बई

इस बेंच से उस बेंच पर क्या जा बैठे जैसे आसमान टूट पड़ा जैसे सात समंदरों में आग लग गई, जैसे चांद-सूरज टकरा गये। जैसे कयामत ही आ गयी। आखिर, भाईजान, कौन सा कुफ्र काबे में बरपा हो गया? आज तो आदमी कदम-कदम पर पैंतरे बदलता है, मिनट-मिनट में ईमान की लेन देन करता है और हर मौत के बाद जिस्म पर जिस्म बदलता चलता है। हमने पार्टी बदल ली तो आखिर किसी की भैंस मार डाली, कौन-सी अनहोनी कर ली?'

अपने दल परिवर्तन की इन शब्दों में सफाई देते हुए जब पड़ोसी राज्य के एक मंत्री ने मीठी कनखियों से श्रोताओं की तरफ देखा तो सारे कमरे में सामूहिक ठहाका गूंज गया। जी भर हंस तो सब दिए मगर उन्होंने जो कहा उसका सारतत्व क्या है यह शायद ही किसी की समझ में आया होगा। मीठे विनोद की यही तो खूबी है कि वह कड़वी सच्चाई की बात-बात में पचा जाता है।

दल परिवर्तन पर चारों तरफ आश्चर्य प्रकट किया जा रहा है - कुछ आश्चर्य निंदात्मक है कुछ दुःखात्मक क्योंकि सदस्यों के दल परिवर्तन के फलस्वरूप कइयों को काफी क्षति भी पहुंची है और कुछ नींदात्मक क्योंकि मेबरों में दिल परिवर्तन से भविष्य में कुछ दलों को लाभ भी हो सकता है। कुछ भी हो किन्तु भारतीय राजनीति में आज का सबसे आश्चर्यजनक दौर दल परिवर्तन ही है। मगर क्या दल परिवर्तन उस महान आश्चर्य से भी बड़ा आश्चर्य है जिसके बारे में महाभारत में युधिष्ठिर से यक्ष ने प्रश्न पूछा था और जो 'यक्ष प्रश्न' के नाम से अजर अमर है?

गरमी की दोपहरी थी। पांडव जंगल में भटक रहे थे। थक कर एक पेड़ की छाया में बैठ गए। युधिष्ठिर ने नकुल से सबके पीने के लिए पानी मंगवाया। नकुल जब एक कुंड के पास जाकर पानी पीने लगा तब कुंड के स्वामी यक्ष ने उसे ललकारा और कहा कि जब तक मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं दोगे, तब तक तुम पानी नहीं पी सकते। अगर तुमने इस शर्त को नहीं माना तो तुम्हें प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा। नकुल ने यक्ष की बात को अनसूनी कर दिया और कुंड में से पानी पी लिया। पानी पीते ही वह मर गया। इस प्रकार सहदेव, अर्जुन और भीम भी यत्र की उपेक्षा करके पानी पीते हुए मर गये। आखिर, युधिष्ठिर वहां पहुंचे और उन्होंने यक्ष के विविध प्रश्नों के उत्तर दिए। अंत में यक्ष ने युधिष्ठिर से सबे दुर्धर्ष प्रश्न पूछा और यह शर्त लगायी कि अगर तुम इसका उत्तर दे दोगे तो तुम्हारे चारों मृत बंधु जीवित हो जाएंगे। यक्ष ने प्रश्न रखा, ''इस जगत का सबसे बड़ा

आश्चर्य क्या है ?'' युधिष्ठिर ने उत्तर दिया- **अहन्यहनि भूतानि, गच्छतीह यमालयम्:, शेषास्स्थावरमिच्छंति, किमश्चर्यमत: परम्।**

प्रति दिन जीव यमलोक को जा रहे हैं। रोज निरंतर यह देखते हुए भी हम सब चाहते हैं कि अनंतकाल तक जीवित रहें। इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है ?

वास्तव में यक्ष प्रश्न और दल परिवर्तन का प्रश्न दोनों एक ही सनातन प्रश्न के दो रूप हैं। वह सनातन प्रश्न है कि 'हम कौन हैं ?' राजनीति की भाषा में कह लीजिए तो यही कि क्या हम कांग्रेस हैं ? नहीं तो जनसंघी है क्या ? नहीं तो क्या स्वतंत्र पार्टी के हैं अथवा कम्युनिस्ट हैं ? दर्शनशास्त्र की भाषा में यों कह लीजिए कि क्या हम जीव हैं या ईश्वर हैं या आत्मा हैं या इन सबके समूह हैं ? जब दार्शनिक बर्गसां से पूछा गया कि वह स्पिनोजा के मार्ग पर है या शोपेन-हावर के मार्ग पर तो दार्शनिक बर्गसां ने कहा- हर घड़ा मिट्टी का घड़ा है, और सब घड़े एक ही घड़ा है, क्योंकि सबकी मिट्टी एक ही मिट्टी मिट्टी हैं - फर्क है तो उस पदार्थ में है जो उन घड़ों में भरा है और पदार्थ का फर्क बहुत बड़ा फर्क है, किन्तु हर पदार्थ मनुष्य की इच्छा का पालन है इसलिए जो कुछ है सब मनुष्य एवं मनुष्य का है।

दर्शन शास्त्र की इस शब्दावली में तो दल परिवर्तन करने के समर्थकों और उसके विरोधियों के लिए कोई भी उपयोग की बात नहीं है क्योंकि वहां मनुष्य के माथे पर पार्टियों के लेवल नहीं लगे हैं। मगर बात तो यहां पार्टी की है। समाज की नहीं, राष्ट्र की नहीं, तो उसके सदस्य वफादारी और अनुशासन का ज्वलंत सबूत देते हुए इसके समर्थन में हाथ उठा देंगे। क्योंकि सवाल पार्टी के विरोध में पार्टी का है सिद्धांत एवं सच्चाई का नहीं। पार्टी के सामने सिद्धांत पानी भरते हैं और सच्चाई झक मारती है। क्योंकि पार्टी है तो पार्टी के सदस्य भी है और अगर पार्टी न रही तो फिर सदस्यों का भी आटा गीला।

जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत। किन्तु आज पार्टी के प्रति इसी वफादारी पर तो गाज गिर रही है। लोग पार्टी की लक्ष्मण रेखा लांघकर या तो दूसरी में चले जाते हैं या कोई नयी पार्टी बना लेते हैं। राजा सिंहासन पर बैठे रहते हैं और एक दिन ऐसा मनहूस आता है कि सिंहासन के पाये ही काफूर हो जाते हैं - कभी-कभी तो राज्याभिषेक के ऐन वक्त पर मंथरा की यह कपट चाल अपना रंग लाती है। बस, राम के बनवास की तरह मंत्रियों का भी अरण्यवास हो जाता है। किन्तु हमारे परित्यक्त मंत्री राम लक्ष्मण की तरह कम समझ थोड़े ही हैं कि भोग को छोड़कर त्याग को सिर पर चढ़ा लें। बल्कल पहन कर तापस वेष में, नंगे पांव डगर-डगर भटकते रहें। वे तो अयोध्या के अयोध्या में ही रहेंगे। ज्योतिषियों से कुंडली दिखलाएंगे और शतचंडी पाठ करवाएंगे कि कब उन्हें फिर अपनी गद्दी मिल जाए। चाहे बरसों तक मनोरथ पूरा न हो किन्तु आरजू की नकेल में तो बंधे ही रहेंगे - **बनते रहे, बिगड़ते रहे, कारोबाकरे, शोक, इक हम की आरजू का सहारा बने रहे।** दल परिवर्तन करने वालों पर मर्यादा भंग करने या लक्ष्मणरेखा लांघने का आरोप लगाया जाता है। किन्तु मर्यादा क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर में लाओत्जे कहता है कि परायी मर्यादा हाथ पांव की बाड़ियां हैं और अपनी आत्मा की मर्यादा गरूड़ के पंख हैं जो ईसा को सातवें आसमान तक की सैर कराते हैं। संत कवि सुन्दरदास भी कहते हैं- **मरजादा मन की भली, तन की बिस का घूंट, गरूड़ सवारी ईस की, ऊंट ढूंठ को ढूंठ।**

मगर दल परिवर्तन में जो लक्ष्मण रेखा लांघी जाती है उससे सीता हरण थोड़े ही होता है, उल्टे राजलक्ष्मी ही मिलती है। फिर वह बुरा क्यों ? सीता ने लक्ष्मणरेखा का उल्लंघन कर दु:ख भोगा किन्तु यहां तो पार्टी छोड़ने पर राज्य मिलता है। तो होगी वह सीता अभागी, यहां तो सोने में सुगंध ही सुगंध है।

शिकायत है कि यह तो ईमानदारी की बात नहीं। वफादारी भी आखिर कोई चीज होती है ? प्रेम का सौदा इस तरह से थोड़े ही तोड़ दिया जाता है कि आज जोड़ा और कल तोड़ दिया। मगर प्रेम की शर्तों को निवाहने की इल्लत कौन उठाये ? प्रेम तो खुशनुमा जिंदगी की कुरबानी मांगता है। सो, ऐसा प्रेम किस काम का ? हाफिज के इस कथन को हाफिज अपने 'दीवान' में ही रक्खे - **दर कबूला-नजरे-इश्क, अव्वल आज आफियत, रफ्ता नदामद बाशद।**

- ''उन्होंने प्रेम कबूल करने के लिए हमारी शर्तें लगा रखी हैं। इनमें सबसे पहली शर्त यह है कि हमने जो भी अच्छे दिन गुजारे हैं हम उन पर शरमिंदा हों।''

हम इन झंझटों में पड़ना अक्लमंदी नहीं समझते। आज के तर्क प्रधान युग में वफादारी अक्ल की जड़ता है। मगर जो जमाने की रफ्तार ही नहीं समझते, नब्ज ही नहीं पहचानते, जिन्हें राजनीति का गूर ही नहीं मालूम, दल परिवर्तन का कभी जिन्होंने लुत्फ ही नहीं लिया, भला वे इसकी रंगत को क्या जानें ?

ना तजुर्बेकारी से वाइज की हैं ये बातें। इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी भी है ? एक विधायक ने शहीदों की स्मृति में देवघर, जसीडीह मुख्य मार्ग से स्थित डाबर स्थान .... शहीद द्वार निर्माण किए जाने को अमर शहीदों के शौर्य गाथा को सुरक्षित रखने में एक कदम बताया, वहीं आगे इन शहीदों की स्मृति में एक दूसरे शहीद द्वार सतसंगतधर देवघर रेलवे स्टेशन के समीप बताने की बात कहीं और शहीद स्थल के विकास करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी।

बरहाल वर्षों तक बिहार सरकार के अधीन समुचित पहल के अभाव में उपेक्षा का ढंग झेलती रही। १८५७ की क्रांति भूमि रोहिणी शहीद स्थल, नवगठित झारखण्ड राज्य के दूसरे वर्षगांठ के अवसर पर भी सरकार और प्रशासन के जमीनी पहल औ राजनीतिज्ञों की इच्छा शक्ति के अभाव में धूल-धूसरित होने के कगार पर है।

आज जब देश की सीमा पर राष्ट्रीय स्मिता की सुरक्षा के लिए हमारे वीर जवान राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं ऐसे समय में रोहिणी शहीद स्थल की प्रासंगिकता और राष्ट्र के सेवकों और देशवासियों को राष्ट्रीयता एवं कौमी एकता का संदेश दे रहा है।

'देश धर्म से बड़ा है। देशभक्ति सबसे बड़ी भक्ति है। शीशदान सबसे बड़ा दान है। माता की करूण पुकार पर, किया जिन्होंने शीश दान, उन वीरों को उन शीरों को, हम करते हैं शत्-शत् प्रणाम।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन कोलकाता : मारवाड़ी सम्मेलन भवन की प्रथम वर्षगांठ आयोजित

मारवाड़ी सम्मेलन भवन की प्रथम वर्षगांठ ३० मार्च २००४ को रामनवमी के दिन गणेश-लक्ष्मी एवं भगवान रामचंद्र की पूजा-अर्चना कर मनाया गया। इस अवसर पर सम्मेलन के सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान, निवर्त्तमान अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार सहित कई सदस्य व कार्यकर्ता उपस्थित थे। सभी पदाधिकारियों ने श्री गणेश लक्ष्मी व श्री रामचंद्र को कुंकुम, अक्षत, फूल, माला, धूप आदि से पूजा अर्चना की। मारवाड़ी सम्मेलन भवन का पुनर्निर्माण कार्य शीघ्र से शीघ्र व सुन्दर से सुन्दर ढंग से योजनानुसार आरम्भ होने की सभी ने प्रार्थना की। यह तय किया गया कि भवन का नक्शा बनायें एवं कार्पोरेशन में देकर कार्यवाही आगे बढ़ाये। माननीय अध्यक्ष महोदय ने संयुक्त महामंत्री श्री पोद्दार को संगमरमर के पत्थरों पर दानदाताओं के नाम अंकित करवाने का दायित्व दिया।

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

तमिलनाडु में सम्मेलन की सशक्त प्रादेशिक सभा का गठन

ता. १५ अप्रैल २००४ को चेन्नै में बसने वाले राजस्थानी प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की एक मीटिंग हुई जिसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तमिलनाडु, चैन्नै शाखा की स्थापना की गई। चैन्नै के प्रमुख्य सामाजिक कार्यकर्त्ता और को इसके संचालन एवं कार्य करने का भार सौंप गया। कुछ कार्यकर्त्ताओं के इस प्रश्न का कि सम्मेलन के कार्यों का क्या रूप होगा, सन्तोषप्रद उत्तर दिया गया। निम्नलिखित महानुभावों का सर्वसम्मति से चुनाव हुआ-

श्री बी.के. गोयनका- उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, श्री कैलाशमल दुगड़- अध्यक्ष, श्री श्याम सुन्दर गोयनका- उपाध्यक्ष, श्री हरीकृष्ण जावर- उपाध्यक्ष, श्री विजय गोयल- महामंत्री, श्री गुलाबचन्द कोटाड़िया- संयुक्त मंत्री, श्री पी.डी. महेश्वरी- कोषाध्यक्ष, श्री शिवकुमार गोयनका- कार्यकारिणी सदस्य, श्री कान्तीलाल सिंगवी- कार्यकारिणी सदस्य, श्री सायरचन्द नहार- कार्यकारिणी सदस्य, श्री हरीशंकर अग्रवाल- कार्यकारिणी सदस्य, श्री मदनलाल गुप्ता- कार्यकारिणी सदस्य, श्री सूरज रत्न दम्मानी-कार्यकारिणी सदस्य, श्री अशोक कुमार मुदड़ा- कार्यकारिणी सदस्य, श्री बंसीलाल राठी- कार्यकारिणी सदस्य, श्री मनोजकुमार सोन्थलिया- कार्यकारिणी सदस्य, श्री के.के. महेश्वरी- कार्यकारिणी सदस्य, श्री जे.पी. अग्रवाल- कार्यकारिणी सदस्य, श्री विश्वनाथ केडिया- कार्यकारिणी सदस्य, श्री रघुनाथ सिसोडिया- कार्यकारिणी सदस्य, श्री मनोहर बगड़िया- कार्यकारिणी सदस्य, श्री शिव भगवान गोयनका- कार्यकारिणी सदस्य।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति की आम-सभा की बैठक में अध्यक्ष का चुनाव सम्पन्न

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति की आम सभा की बैठक दिनांक ११.४.०४ को अध्यक्ष श्री विजय कुमार बुधिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

श्री बुधिया ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में शिक्षा समिति के कार्यकलापों पर प्रकाश डाला। शिक्षा समिति की विस्तृत जानकारी महासचिव श्री हरिकृष्ण अग्रवाल ने अपने प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया। उपस्थित सभी सदस्यों ने उनके कार्यों की भरपूर प्रशंसा की। गत बैठक की कार्यवाही सम्मति से सम्पुष्टि की गई। सन् २००३-२००४ का आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। सन् २००४-२००६ के लिए महेन्द्र कुमार चौधरी अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। अध्यक्ष श्री चौधरी ने श्री प्रह्लाद शर्मा को महासचिव के पद पर आम सभा की सर्वसम्मति से मनोनीत किया।

अध्यक्ष द्वारा सर्वश्री घनश्याम दास जोधानी, पटना, श्याम सुन्दर हिसारिया, पटना एवं राम गोपाल सुरेका समस्तीपुर को उपाध्यक्ष, बालकृष्ण चौधरी (मन्टु) को सचिव एवं श्री अशोक कुमार झुनझुनवाला को कोषाध्यक्ष तथा श्री उत्तम प्रकाश बुधिया

को अंकेक्षक के पद पर मनोनीत किया गया।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

सम्बलपुर शाखा : अध्यक्ष का चुनाव एवं कार्यकारिणी की घोषणा सम्पन्न

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सम्बलपुर इकाई के नये अध्यक्ष का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें श्री दिनेश कुमार अग्रवाल अध्यक्ष निर्वाचित हुए। तदुपरांत अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी की घोषणा की गई जो निम्नानुसार है : उपाध्यक्ष- सर्वश्री पुरनमल बरेलिया, मंगतुराम अग्रवाल, इंदरमल अग्रवाल, भोलाराम टिबड़ेवाल, राजकुमार केडिया, महासचिव- हजारीमल ओझा, संयुक्त महासचिव- राजकुमार पोद्दार, रवीन्द्र अग्रवाल, सचिव- सर्वश्री बांके बिहारी अग्रवाल, ईश्वरचंद्र जिन्दल, श्यामु चांडक, महेश अग्रवाल, सदस्यता प्रभारी- सुरेश अग्रवाल, अर्थ प्रभारी- किशन अग्रवाल (लाले), कार्यक्रम संयोजक- बिहारीलाल पंसारी (पार्षद), कार्यक्रम क्रियान्वयन- प्रह्लाद राय अग्रवाल (पार्षद), कोषाध्यक्ष- सज्जन भूत, कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री विनोद शर्मा, सिद्धेश अग्रवाल, गोविन्द पोद्दार, नन्दकिशोर जांगिड, बाबूलाल अग्रवाल, पुरुषोत्तम पालीवाल, रमेश दारूका, हेतराम शर्मा, प्रकाश बेरीवाल, ताराचंद सोनी, श्याम सुन्दर अग्रवाल, श्रवण साहा, पुरुषोत्तम तुलस्यान, सुशील मित्तल, प्रवक्ता नटवरलाल अग्रवाल, शम्भु जगतरामका। प्रथम कार्यकारिणी की बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

मलकापुर : गुडीपाडवा पर नूतन वर्षाभिनन्दन

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री दामोदर लखानी ने नववर्ष गुडीपाडवा के अवसर पर आदि शक्ति से सबके लिए स्वास्थ्य, समृद्धि और शांति की मंगल कामना की है। वर्तमान प्रतिकूल परिस्थितियों में हमारी सामाजिक चेतना को अहम् स्थान है, अगर हमने इसे अभी जागृत नहीं किया, सामाजिक अनुबंध का महत्व नहीं समझा तो भविष्य हमें कटघरे में खड़ा कर देगा। इस समय हमारा कर्त्तव्य है कि हमें संगठित होना है, सेवाभाव जागृत करना है, दूसरे समाज के सामने आदर्श प्रस्थापित करना है, इसलिए हमें स्वयं को सुधारना होगा, व्यक्ति से समाज बनता है समाज से राष्ट्र, हम सुधरेंगे समाज सुधरेगा, संयमित रहेगा, राष्ट्र उन्नति करेगा। अनेक व्यक्तियों से परिवार, अनेक परिवारों से समाज एवं समाज से राष्ट्र, हमें हर व्यक्ति को सब जगह एक जिम्मेदार घटक बनाना है, जो हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। आइये, हम सब इस नववर्ष का आरम्भ हमारे कर्त्तव्य परायण, संयमित, जिम्मेदार व्यक्ति बनने के प्रयास के संकल्प से करें, राष्ट्रहित में समाजहित एवं समाजहित में स्वहित निहित है, संगठित होकर प्रतिकूलता में अनुकूलता लाने का प्रयास करें एवं उन्नति की ओर अग्रसर होवें।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

हैदराबाद : रक्तदान एवं नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर सम्पन्न

हैदराबाद सिकन्दराबाद मारवाड़ी महिला संगठन द्वारा ७ फरवरी को रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें बड़ी संख्या में युवा छात्र-छात्राओं एवं महिलाओं ने रक्तदान किया। शिविर का उद्घाटन प्रसिद्ध समाजसेवी भंवरलाल बाफना ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थानी प्रगति समाज के अध्यक्ष श्री कमल नारायण अग्रवाल एवं विशेष अतिथि के रूप में केडिया कालेज के प्राचार्य डॉ. डी.बी.जी. कृष्णा उपस्थित हुए। महिला संगठन की अध्यक्षा रत्नमाला साबू ने रक्तदान करने वाले कार्यकर्त्ताओं एवं अतिथियों का स्वागत किया और मंत्राणी कलावती जाजू ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ८ फरवरी को मारवाड़ी हिन्दी विद्यालयों में नि:शुल्क सामान्य स्वास्थ्य एवं नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री प्रकाशचंद्र श्रीमाल ने किया और सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री कैलाश नारायण भांगड़िया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। शिविर में २०० से अधिक रोगियों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं नि:शुल्क दवाएं वितरित की गई। १५८ रोगियों का परिक्षण किया गया जिसमें ५५ रोगियों को नि:शुल्क चश्मे वितरित किए गए। रोगियों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण हरिप्रसाद मेमोरियल अस्पताल के अधीक्षक डा. आर. पी. तोष्णीवाल एवं डा. चंद्रमौली ने किया। स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डा. देवयानी एवं डा. पुष्पा संघी ने महिला रोगियों की जांच की। डा. विद्या मुंदड़ा के नेतृत्व में सरोजिनी

देवी नेत्र चिकित्सालय के दल ने नेत्र रोगियों की जांच की। संगठन की अध्यक्षा रत्नमाला साबू ने अतिथियों एवं निःशुल्क सेवाएं प्रदान करने वाले चिकित्सकों को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिह्न भेंट किए। कलावती जाजू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

जूनागढ़ : सिलाई मशीन का उद्घाटन एवं होली मिलन समारोह सम्पन्न

मारवाड़ी महिला समिति जूनागढ़ शाखा एवं गायत्री परिवार ट्रस्ट द्वारा संयुक्त रूप से होली मिलन के अवसर पर सिलाई मशीन का उद्घाटन किया गया। ४ मशीन का खर्च समिति की अध्यक्षा श्रीमती जामोति देवी अग्रवाल एवं गायत्री परिवार ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मानकचंद अग्रवाल ने वहन किया। राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती मंजु मेहारिया, उनके पुत्र व पुत्रवधु एवं ड्राइव , सहित सड़क दुर्घटना में हुई मृत्यु पर ५ मिनट का मौन रखकर गहरा शोक प्रकट किया गया एवं उन सबों की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। गायत्री परिवार की बहन कांतादेवी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि महिला समिति की प्रगति के लिए समय, श्रम व अर्थदान करना ही पड़ेगा। महिलाओं का स्वाभिमान एवं संगठन शक्ति जाग जाए तो कोई भी कार्य अधूरा नहीं रह सकता। मुख्य अतिथि श्रीमती शुभलक्ष्मी नायक द्वारा सिलाई मशीन का उद्घाटन किया गया। होली मिलन के शुभ अवसर पर सभी माताओं एवं बहनों को गुलाल लगाकर उनका अभिनंदन किया गया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

हैदराबाद : राष्ट्रीय अध्यक्ष ने किया आन्ध्र प्रदेश का दौरा

१ मार्च से ५ मार्च तक मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने आंध्र प्रदेश का सांगठनिक दौरा किया। उन्होंने जहीराबाद, निजामाबाद, मंचेरियाल, बेल्लमपल्ली, कागजनगर, पेद्दापल्ली, करीमनगर, तादूर, शादनगर एवं हैदराबाद शाखा का दौरा किया। दौरे में आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय अध्यक्ष रमेश कुमार बंग एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य राजगोपाल सारडा उनके साथ रहे। राष्ट्रीय एवं प्रांतीय नेतृत्व की उपस्थिति से सभी कार्यकर्ता अत्यन्त उत्साहित थे। शाखाओं द्वारा आयोजित की गई विचार-गोष्ठियों में युवा कार्यकर्ताओं के साथ-साथ वरिष्ठ नगरजन एवं महिलाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। ५ मार्च को हैदराबाद में श्री सुलतानिया के सम्मान में आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच द्वारा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हैदराबाद के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री शम्भुलाल विजयवर्गीय थे। समारोह के संयोजक श्री नारायणदास मालाणी थे एवं संचालन प्रादेशिक मंत्री श्री रामप्रकाश भंडारी ने किया। नगरद्वय की अनेक संस्थाओं ने पुष्पहार द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि का स्वागत किया। आयोजित विचार गोष्ठियों में श्री सुलतानिया ने मंच के विस्तार मंच द्वारा संचालित कार्यक्रम, मंच में महिलाओं की सहभागिता एवं जनसेवा कार्यक्रमों पर कहा कि ''किसी भी समाज की संगठित और जागरूक युवा शक्ति उस समाज की प्रगति का मेरूदण्ड होती है अत: मारवाड़ी समाज के युवा वर्ग को संगठित होना होगा। मारवाड़ी युवा मंच समाज की संगठित युवा शक्ति का सबसे बड़ा प्रतीक है। मंच युवा समाज सेवियों की दृढ़ इच्छा शक्ति का सुपरिणाम है। मारवाड़ी समाज की राष्ट्रनिष्ठ सेवा भावना ने ही मारवाड़ी समाज को सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रतिष्ठा और सम्मानपूर्ण स्थान दिलाया है। मंच के मुख्यतया तीन राष्ट्रीय कार्यक्रम हैं- पहला- कृत्रिम पैर प्रत्यारोपण कार्यक्रम है, जिसके अन्तर्गत जरूरतमंद अपंग लोगों को शिविर आयोजित कर निःशुल्क कृत्रिम पैर प्रदान किए जाते हैं। अभी तक इस कार्यक्रम का लाभ २५ हज़ार से भी अधिक लोग उठा चुके हैं। इस सफलता से मोबाईल सेवा भी प्रारम्भ की गई है। दूसरा राष्ट्रीय कार्यक्रम एम्बुलेन्स एवं शववाहिनी सेवा है। विभिन्न शाखाओं द्वारा १२० एम्बुलेन्स एवं शववाहिनी सेवा संचालित है। मंच का तीसरा कार्यक्रम अमृतधारा पेयजल योजना है।'' उन्होंने सभी शाखाओं से उक्त तीनों राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालित करने का आग्रह किया।

प्रादेशिक अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने कहा कि सन् १९८५ में स्थापित इस संगठन की आज देशभर में ४०० से भी अधिक शाखाएं सक्रिय रूप से समाज को अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं जो कि युवा वर्ग की असीम सेवा भावना और राष्ट्रीय दायित्व बोध की स्पष्ट परिचायक है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझकर मंच के लिए थोड़ा बहुत समय अवश्य निकालें। राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में मंचेरियाल, जहीराबाद, ताण्डूर आदि शाखाओं द्वारा ग्रीष्मकाल में शीतल पेयजल उपलब्ध कराने के लिए नि:शुल्क जलशालाओं का उद्घाटन किया गया।

कोलकाता : उत्तर कोलकाता शाखा का वार्षिकोत्सव एवं पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण सम्पन्न

मंच की उत्तर कोलकाता शाखा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शाखा के नये अध्यक्ष श्री दिलीप गोयनका का एवं सचिव श्री विमल चौधरी को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। श्री सज्जन भजनका ने मंच की विकास यात्रा एवं मंच दर्शन तथा श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने शाखाओं की गतिविधियों का उल्लेख किया। वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में स्थानीय कला मंदिर में कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री राजकमल जौहरी ने की। इस अवसर पर सर्वश्री संजय अग्रवाल, सतीश मुरारका, विनोद सराफ, डा. कृष्ण बिहारी मिश्र, राधेश्याम गोयनका, लोकनाथ डोकानिया, रतन शाह, गौरी शंकर कांया, कृष्ण गोपाल सिन्हा, श्यामसुन्दर गागड़िया आदि अनेकों गणमान्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रमोद शाह ने किया एवं श्री विमल चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सप्तम कार्यकारिणी एवं बीसवीं राष्ट्रीय सभा की बैठक एवं रिसड़ा शाखा का सोलहवां वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

२०-२१ मार्च २००४ को अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के सप्तम राष्ट्रीय कार्यकारिणी की द्वितीय बैठक एवं बीसवीं राष्ट्रीय सभा का आयोजन रिसड़ा शाखा के आतिथ्य में रिसड़ा में सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया ने इसकी अध्यक्षता की मंच द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर किए जा रहे विभिन्न समाजोपयोगी कार्यों की समीक्षा की गई। विभिन्न प्रान्तीय इकाइयों एवं शाखाओं को उनके विशेष कार्यों हेतु पुरस्कृत भी किया गया।

रिसड़ा शाखा के १६वें वार्षिकोत्सव समारोह का उद्घाटन विधायक श्रीमती रत्ना दे ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया, मंडलीय उपाध्यक्ष श्री श्रवण अग्रवाल, बृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष श्री जगदीशचन्द एन मूंधड़ा एवं जयश्री टैक्सटाइल्स के वरिष्ठ अध्यक्ष श्री जगदीश चन्द्र सोनी एवं श्री अमरनाथ चौधरी इत्यादि उपस्थित थे। शाखा अध्यक्ष श्री देवकिशन करनानी ने स्वागत भाषण एवं सचिव श्री कुलदीप गट्टानी ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वरिष्ठ सदस्य श्री अशोक देवतिया ने युवा शक्ति सेवा ट्रस्ट द्वारा गंगातट के किनारे जमीन पर संभावित निर्माण कार्यों की जानकारी देते हुए सहयोग की कामना की। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं उद्योग क्षेत्र में विशिष्टता हेतु शाखा द्वारा श्री रामगोपाल माहेश्वरी, श्रीमती कलावती शर्मा एवं उषा अग्रवाल श्री राकेश कोठारी, श्री प्रदीप अग्रवाल एवं श्री कैलाश प्रसाद मोर को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। सत्र २००४-०५ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री पंकज माहेश्वरी के नेतृत्व में गठित कार्यकारिणी समिति ने शपथ पाठ किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन बाल कलाकारों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में स्वागतमंत्री डा. संजय अग्रवाल उपाध्यक्ष श्री हरीश काबरा संयोजक सर्वश्री प्रमोद जैन, पंकज माहेश्वरी, प्रमोद जोशी, प्रेम अग्रवाल, अनुज डागा, विवेक अग्रवाल, प्रदीप जीवराजका, मुकेश खेतान, मनोज सोमानी सहित श्री विजय भूत श्री संजीव लोसलका तथा राजेन्द्र काबरा का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा श्री दिनेश चन्द्र वाजपेयी का नागरिक अभिनन्दन

गंगासागर मेला सेवा उत्सव संयुक्त समिति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के तत्वावधान में पश्चिम बंगाल के सेवा निवृत्त पुलिस महानिदेशक श्री दिनेश वाजपेयी का नागरिक अभिनंदन समारोह सन्मार्ग पत्रिका के सम्पादक श्री रामअवतार गुप्ता की अध्यक्षता में ११ अप्रैल को स्थानीय कलाकुंज में सम्पन्न हुआ। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष एवं समारोह के प्रधान वक्ता श्री मोहनलाल तुलस्यान ने अपने चिरपरिचित शैली में सम्बोधित करते हुए कहा- ''श्री वाजपेयी हमारे दिलों से रिटायर नहीं हुए हैं, न होंगे। जो समय की कद्र नहीं करता उसका विकास नहीं होता। श्री वाजपेयी उस शख्सियत का नाम है जो सांचे में नहीं बदला बल्कि सांचे को ही बदल दिया। इन्होंने पुलिस के भयाक्रांत छवि को मिटाया है। श्री वाजपेयी एक नये रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। पुलिस की वर्दी में भी मानवीय गुणों को सर्वोपरि मानने वाले, अपने आचरण से आम आदमी के दिलो दिमाग में भय की जगह विश्वास, स्नेह व मित्रता का संदेश देने वाले पुलिस अफसर का जो रूपक उन्होंने निर्मित किया यह सिर्फ पश्चिम बंगाल ही नहीं पूरे देश में पुलिस की भूमिका को नये सिरे से परिभाषित करने का सबब बन गया। श्री वाजपेयी नवाबों के शहर लखनऊ से ताल्लुकात रखते हैं पर अपने कार्य व सोच में वे पूरी तरह बंगाल की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे पुलिस विभाग में होते हुए भी जनता के प्रतिनिधि के रूप में रहे। इस पद पर रहते हुए ही उन्होंने 'नव दिशा' का सूत्रपात किया। 'नव दिशा' के अन्तर्गत फुटपाथी बच्चों के स्वास्थ्य की नियमित जांच होती है एवं उन्हें दवा दी जाती है। उसी तरह 'प्रवाह' के माध्यम से थाने में रक्तदान शिविरों का आयोजन होता है।

''पुलिस की सामाजि छवि बनाने का यह अभिनव प्रयास श्री वाजपेयी के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण आयाम है, श्री वाजपेयी को करीब से देखने, समझने का अवसर मुझे मिला है। लायंस क्लब 'नव दिशा' में पुलिस की मुख्य सहयोगी है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यक्रमों में भी उनका सुझाव व सहयोग निरंतर मिलता रहा है। श्री तुलस्यान ने अपील करते हुए कहा कि श्री वाजपेयी कोलकाता के लगभग ६० लाख हिन्दी भाषियों का प्रतिनिधित्व करें हम सभी यही चाहते हैं।''

समारोह के अध्यक्ष श्री रामअवतार गुप्त ने कहा ''वाजपेयी जी का सम्मान अतुलनीय है। उनकी कृति ऐसी है कि सिर चढ़कर बोतली है। उनकी लोकप्रियता हिन्दी और बंगाली भाषियों में बराबर है। बहुत कम ही लोग जानते हैं कि श्री वाजपेयी साहित्य प्रेमी भी है तथा उन्होंने साहित्य का गहरा अध्ययन किया है। यह उनके प्रति लोगों का प्रेम और स्नेह है कि इतने भारी तादाद में लोग आज इस सम्मान समारोह में आए हैं। सेवा कार्यों में वाजपेयीजी का सहयोग अपेक्षित है।'' समारोह को कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तथा एफटीओ के महासचिव श्री तारकनाथ त्रिवेदी ने कहा ''वाजपेयीजी ने पुलिस विभाग को एक नयी दिशा दी।'' इस अवसर पर श्री वाजपेयी को कुमकुम तिलक अंकित कर शाल, मेवा पात्र, पुष्पमाला प्रदान की गई। श्री लक्ष्मीकांत तिवारी ने स्मृति चिह्न एवं श्री अरूण सुरेका ने अभिनंदन पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री महावीर प्रसाद रावत ने किया। अभिनंदन समारोह में श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति, हरियाणा नागरिक संघ, हरियाणा चेरीटेबल ट्रस्ट, विश्वनाथ सेवा समिति, सिटिजन वेलफेयर काउन्सिल, माथुर वैश्य नवयुवक संघ, पंजाबी बिरादरी, कुम्हारटोली सेवा समिति, कोलकाता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति, श्रीराणी सती प्रचार समिति, भारत रिलीफ सोसायटी, बजरंग परिषद, श्री शिवशक्ति सेवा समिति, श्री श्याम प्रेम मंडल, नागरिक स्वास्थ्य संघ, लायंस क्लब जिला ३२२-बी, महेश्वरी सभा, जैन युवा संगठन, सलकिया सेवा संघ, श्री अग्रसेन स्मृति भवन, ओसवाल भवन, मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, मातृमंगल सेवा प्रतिष्ठान, विशुद्धानंद अस्पताल आदि सैंकड़ों की तादाद में कोलकाता महानगर के सामाजिक संस्थानों ने श्री वाजपेयी का नागरिक अभिनंदन किया।

अपने सम्मान से अभिभूत श्री दिनेशचंद्र वाजपेयी ने कहा- ''यह सम्मान आपके स्नेह एवं भावना का प्रतीक है। मैं भाव विह्वल हूं। मैं भाग्यशाली व गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। अपने कार्यकाल में आप सभी के सहयोग से मेरा आत्मविश्वास मजबूत हुआ। आपके बल आगे बढ़ा। समाज से अलग रहकर पुलिस कभी भी सफल नहीं हो सकती है। हमने अपने कार्यकाल में समाज से जुड़कर काम करने की कोशिश की। पुलिस आज जिस मानसिक परेशानी में काम करती है ऐसी स्थिति में समाज का सहयोग न मिले तो वह कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकती है। 'नव दिशा' कार्यक्रम तभी सफल हो पाया जब स्वयंसेवी संस्थाओं ने पुलिस को सहयोग दिया। पुलिस की आलोचना होती है लेकिन यह भी सोचना चाहिए कि अच्छे बुरे लोग हर क्षेत्र में है। पुलिस का ऐसा काम ही है कि परिस्थितिवश मानव को अमानवीय व्यवहार करना पड़ता है, लेकिन समाज के साथ रहने पर मानवीय बनाया जा सकता है।'' श्री लक्ष्मीकांत तिवारी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर सर्वश्री राजेन्द्र राजा, विष्णु शंकर मिश्र, सुभाष मुरारका, प्रभात कुमार, विजय सराफ, ओमप्रकाश पोद्दार, राजेन्द्र द्विवेदी, डा. एस. गांगुली, केवलचंद मिमानी, प्रह्लाद राय, प्रभा वाजपेयी, वीणा शुक्ला, नवल जोशी, श्यामसुन्दर अग्रवाल, मोहनलाल दुजारी आदि हजारों की संख्या में गणमान्य उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि / शोकसभा

मुजफ्फरपुर : डॉ. मंजु मेहरिया को श्रद्धांजलि अर्पण

मुजफ्फरपुर महिला मंच परिवार की सभी सदस्याओं की ओर से डॉ. मंजु मेहारिया को उनके असमय निधन पर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए निम्न शोक प्रस्ताव पढ़ा गया - ''अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा डॉ. मंजु मेहारिया के आकस्मिक एवं हृदय-विदारक निधन के समाचार से मुजफ्फरपुर महिला मंच की हम सभी बहनें शोक-विह्वल है। ईश्वर से प्रार्थना है कि मंजुजी एवं उनके पुत्र तथा पुत्रवधु की दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें एवं उनके शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय कष्ट के दारूण समय में धैर्य रखने का साहस दें। मंजुजी जैसी महान शख्सियत कभी मरती नहीं। वे महिला सम्मेलन से जुड़ी सभी बहनों के हृदय में सर्वदा जीवंत रहेगी एवं उनकी कर्मशीलता, कर्मठता एवं संकल्पों की असंख्य दीप-शिखाएं हम सभी के कर्म पथ को प्रकाश परिपूरित करती रहेगी।''

भोग नहीं त्याग हो
हमारी आर्थिक व्यवस्था का आधार

आज की औद्योगिक सभ्यता देश या जाति या भाषा पर ठहरी हुई किन्हीं दीवारों को सहन नहीं कर सकती। क्योंकि ये दीवारें उसकी प्रगति में बाधक बनती हैं। वह तो केवल मानवता के ही आधार पर ठहरना चाहती है।

पाश्चात्य देशों में जो आज संघर्ष का वातावरण है वह मेरी समझ में इसी कारण से है कि अपनी पुरानी विचार-परम्परा के अनुसार वहां लोग इस प्रकार की दीवारों को बनाये रखना चाहे हैं जब कि उनकी औद्योगिक सभ्यता उस के अन्दर शांत रहकर प्रगति नहीं कर सकती। दीवारें टूटनीं है और उनके टूटने के बाद ही इस औद्योगिक सभ्यता की धार अवाध किन्तु शांत रूप से बह सकेगी।

हमारी संस्कृति ने उन दीवारों को कभी महत्त्व दिया ही न था। अत: मैं तो यही समझता हूं कि यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करनी जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते हैं तो हमें अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए, अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहिए।

- राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

TANTIA CONSTRUCTION COMPANY LIMITED

Major Civil Engineering Contractor for
Road Works, Bridges & Flyovers, Housing Complexes,
Industrial Structures, Railway Lines, Pile Foundations and Dykes

Regd. & Admn. Office :
25-27, Netaji Subhas Road
1st floor
Kolkata- 700 001

Phone : 2220 1896 / 7300 / 6284
Fax : 2220 7403
Email : tantia@cal.vsnl.net.in

Corporate Office :
"JEEWANSATYA"
DD6, Salt Lake City
Sector I
Kolkata- 700 064

Phone : 2359 7602/3/4/5
Fax : 2359 3616
Email : tantia@cal.vsnl.net.in

Delhi Office :
407 & 408, Padma Tower-II
22, Rajendra Place
New Delhi - 110 008

Phone : 2582 2094 / 2575 7794
Fax : (011) 2582 2094
Email : tccl@nde.vsnl.net.in

From :
All India Marwari Federation
152B, M.G. Road, Kolkata-7
Phone : 2268-0319

To,